ओ३म्

# आर्यावर्त केसरी

विश्व भर में भारतीय संस्कृति का उद्घोषक पाक्षिक

वार्षिक शुल्क : 100/-
आजीवन : 1100/-
(विदेश में) 5 वर्ष के 35 डॉलर

आर.एन.आई.सं.
UPHIN/2002/7589
डाक पंजीकरण संख्या-
UPMRD Dn-64/2018-20
दयानन्दाब्द 195
मानव सृष्टि सं.- 1960853120
सृष्टि सं. - 1972949120

ARYAWART KESARI
Amroha U.P.-244221
India

वर्ष-18 अंक-19 मिति - माघ कृष्ण 6 से माघ शुक्ल 6 सम्वत् 2076 विक्रमी 16 से 31 जनवरी 2020 अमरोहा (उ.प्र.) पृ. 12 प्रति -5/-

## महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट भवन

## आओ चले ऋषि दयानन्द की पावन जन्म स्थली टंकारा

**20, 21 व 22 फरवरी को होगा भव्य ऋषि बोधोत्सव**

## आर्यत्व वैदिक मिशन तथा मानवता की सेवा की गौरव गाथा गा रहा है आर्य समाज गांधी धाम द्वारा संचालित जीवन प्रभात प्रकल्प

जहां हो रहा है मानवता का निर्माण। 24 घंटे सक्रिय रहने वाली आर्य समाज है गांधी धाम। आचार्य वाचोनिधि आर्य के नेतृत्व में लिखी जा रही है एक नयी इबारत।

**यह आर्य समाज का अनाथालय नहीं सनाथालय है।**

कुलपिता गिरीश खोसला अमेरिका को कोटिशः नमन

आर्यसमाज गांधी धाम के 66वें वार्षिकोत्सव पर पढ़िये विशेष रिपोट अंदर के पृष्ठों पर

।। ओ३म ।।

# आर्यावर्त केसरी के नेतृत्व में टंकारा यात्रा

## दिनांक: 18 फरवरी से 25 फरवरी 2020 तक, तिथि व स्थलवार कार्यक्रम विवरण

दिनांक- 18-02-2020 : प्रात: 8.00 बजे : आला हजरत एक्सप्रेस (ट्रेन नं0 14311) द्वारा मुरादाबाद/अमरोहा से अहमदाबाद के लिए प्रस्थान। ट्रेन का समय- बरेली- प्रात: 6.35, मुरादाबाद, 8.13, अमरोहा- 8.45, हापुड़- 9:50 तथा दिल्ली का समय : 11:40 है)।

दिनांक- 19-02-2020 : प्रात: 06:00 बजे : अहमदाबाद आगमन। **(यह रेलयात्रा केवल अहमदाबाद तक ही रहेगी। अहमदाबाद जंक्शन पर हमें उतरना है। कृपया ट्रेन से उतरने के बाद रेलवे स्टेशन पर यात्रा के लिए तैयार खड़ी अपनी-अपनी निर्धारित डीलक्स बसों में ही बैठें। आपकी निर्धारित बस संख्या आपको ट्रेन में ही यात्रा के समय बतायी जाएगी।)**

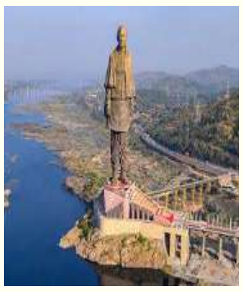

: प्रात: 6-00 बजे : अहमदाबाद से सरदार सरोवर स्थित **सरदार वल्लभ भाई पटेल के स्मारक** की ओर प्रस्थान। अहमदाबाद से प्रस्थान करने के बाद **हाईवे स्थित एक रिसोर्ट** में स्नान तथा जलपान की व्यवस्था की गयी है। तदोपरांत सीधे सरदार वल्लभ भाई पटेल के स्मारक पर पहुंचना है।

: दोपहर 1.00 बजे : **सरदार सरोवर** आगमन तथा **स्मारक-स्थल** का परिभ्रमण कार्यक्रम एवं दोपहर का भोजन।

: सायं 6.00 बजे : सरदार सरोवर से **नीलकण्ठ महादेव (पाउचा)** के लिए प्रस्थान। यह एक भव्य एवं विराट शिवालय है, जो लगभग 650 बीघा जमीन पर स्थापित है। सायं 7-30 बजे से रात्रि 10-00 तक यहीं पर परिभ्रमण कार्यक्रम रहेगा तथा इसी स्थान पर भोजन की भी व्यवस्था की गयी है।

: रात्रि 10.30 बजे : नीलकण्ठ महादेव (पाउचा) से पावन **ऋषि जन्मभूमि टंकारा** (राजकोट) के लिए प्रस्थान।

दिनांक- 20-02-2020 : प्रात: 5.30 बजे : पावन ऋषि जन्मभूमि टंकारा आगमन। यहां हम लोग दिनांक 20-2-2020 की प्रात: से दिनांक 21-2-2020 की रात्रि 10.00 तक श्री महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट, टंकारा द्वारा आयोजित **भव्य ऋषि बोधोत्सव** में सहभागिता करेंगे।

दिनांक- 21-02-2020 : रात्रि 10.00 बजे टंकारा से **श्री द्वारिकाधीश धाम** के लिए प्रस्थान।

दिनांक- 22-02-2020 : प्रात: 5:00 बजे **श्री द्वारिकाधीश धाम आगमन**। यहां **स्वामी नारायण मंदिर** तथा **महाजनबाड़ी** में प्रवास, जलपान तथा भोजन की व्यवस्था की गयी है। **रात्रिकालीन विश्राम** भी इसी स्थली पर होगा।

: प्रात: 8.00 बजे जलपान के उपरांत द्वारिका में **रुक्मणी मन्दिर, गोपी तालाब आदि का भ्रमण**। पूर्वाह्न 11.00 बजे **भेंट द्वारिका**, जो समुद्र के बीच में स्थित है, के भ्रमण के उपरांत सीधे **श्री नागेश्वर महादेव** (द्वादश ज्योतिर्लिंग में से एक) का दिग्दर्शन करेंगे। तदोपरांत अपराह्न 2.00 बजे **स्वामी नारायण मंदिर- महाजनबाड़ी** में भोजन करना है। अल्पकालिक विश्राम के पश्चात् सायंकालीन वेला में देश के चार धामों में से एक धाम **'द्वारिकाधीश धाम'** का दिग्दर्शन होगा तथा पुन: विश्राम-स्थल पर लौटकर सायं 7-30 बजे भोजन। तदोपरांत रात्रि विश्राम करेंगे।

दिनांक- 23-02-2020 : प्रात: 5:00 बजे **द्वारिका** से जलपान के उपरांत **पोरबन्दर** के लिए प्रस्थान। प्रात: 8:30 बजे **पोरबन्दर आगमन** तथा पोरबन्दर में **गांधी जी की जन्मस्थली, सुदामा महल, गुरुकुल, भारतमाता मन्दिर तथा तारामण्डल** आदि प्रमुख दर्शनीय स्थलों का यथासंभव परिभ्रमण। तदोपरांत पूर्वाह्न 11.30 बजे **बस-स्थल पर ही भोजन होगा**। भोजनोपरान्त दोपहर 12.00 बजे **पोरबन्दर से भालका तीर्थ** के लिए प्रस्थान, तथा भालका तीर्थ से **श्री सोमनाथ** (द्वादश ज्योतिर्लिंग में से एक) के लिए प्रस्थान। सायं 5.00 बजे **सोमनाथ आगमन**। सोमनाथ में स्थापित **भव्य व ऐतिहासिक सोमनाथ मंदिर में आरती**, तथा 7.00 से 8.00 बजे तक **लाइट एण्ड साउण्ड कार्यक्रम** का दिग्दर्शन।

: रात्रि 8.30 बजे **सोमनाथ ट्रस्ट परिसर में भोजन की व्यवस्था की गयी है।**

: रात्रि 10.00 बजे **सोमनाथ तीर्थ से पुन: टंकारा के लिए प्रस्थान।**

दिनांक-24-02-2020 : प्रात: 4.00 बजे **ऋषि जन्मभूमि टंकारा आगमन**। स्नान तथा जलपान। प्रात: 8.30 बजे से 10.30 बजे तक **यज्ञ एवं सांस्कृतिक आयोजन- भजन-प्रवचन कार्यक्रम**। पूर्वाह्न 11.30 बजे **टंकारा से सामाख्याली रेलवे स्टेशन के लिए प्रस्थान।** सामाख्याली से अपराह्न 3:00 बजे **आला हजरत एक्सप्रेस** (ट्रेन नं0 14312) द्वारा यह यात्रा घर-वापसी के लिए प्रस्थान करेगी। **सायंकालीन भोजन** अहमदाबाद में ट्रेन में ही होगा। यह ट्रेन अग्रांकित समयानुसार दिनांक 25-2-2020 को बरेली पहुंचेगी-

दिनांक- 25-02-2020 : **वापसी आगमन-** प्रात: 8.30 बजे **जयपुर,** 11.00 बजे **अलवर,** दोपहर 12.00 बजे **रिवाड़ी,** 1.20 बजे **गुरुग्राम,** 2.30 बजे दिल्ली 3.30 बजे **गाजियाबाद,** 4.15 बजे **हापुड़,** 5.40 बजे **अमरोहा,** 6.30 बजे **मुरादाबाद,** 7.00 बजे **रामपुर** होते हुए सायं 8.25 बजे **बरेली** पहुंचेगी। धन्यवाद! **(इत्यो३म्....)**

**ओ३म् स्वस्ति पंथा मनुचरेम् सूर्याचन्द्र मसाविव: - हमारी यात्रा शुभ हो, मंगलकारी हो -ऐसी प्रभु से कामना है।**

नोट :
- ❖ दिनांक-19-2-2020 प्रात:काल से 24-2-2020 दोपहर 2.00 बजे तक **अहमदाबाद से सामाख्याली** तक समस्त यात्रा डीलक्स बसों द्वारा होगी।
- ❖ जो महानुभाव दिनांक-17-2-2020 को सायंकाल तक **मुरादाबाद पहुंच रहे हैं,** उनके भोजन एवं रात्रि विश्राम की व्यवस्था **आर्यसमाज, स्टेशन रोड, गंज, मुरादाबाद** में रहेगी।
- ❖ कृपया कोई भी एक **आई.डी. प्रूफ,** जैसे- आधार कार्ड, पहचान पत्रा, पेन कार्ड आदि अपने साथ अवश्य साथ रखें।
- ❖ रात्रिकालीन आवास की व्यवस्था गतवर्षों की भांति सार्वजनिक स्थलों पर ही की गयी है। जो महानुभाव टंकारा (मोरवी) अथवा द्वारिका में होटल में रुकना चाहें,

**सुमन कुमार वैदिक**
व्यवस्थापक
मोबा.: 9456274350, 8368508395

**डॉ. बीना आर्या**
साहित्य सम्पादक- आर्यावर्त केसरी, अमरोहा
मोबा.: 9897234053

**डॉ. अशोक कुमार आर्य**
संयोजक/सम्पादक- आर्यावर्त केसरी, अमरोहा
मोबा.: 09412139333, 8630822099

**सम्पर्क सूत्र, कार्यालय : मोबा. : 6398864391, 7017448224**

विशेष : कार्यक्रम में किसी भी प्रकार के परिवर्तन अथवा संशोधन का पूर्ण अधिकार संयोजक को होगा। आपका सात्विक सहयोग प्रार्थनीय है। धन्यवाद!

# शास्त्रार्थ महारथी पं० श्री गणपति शर्मा

आर्यसमाज की दिग्दिगन्त व्यापिनी कीर्तिलता को जिन महापुरुषों ने अपने श्रम-सीकर से सींचा है, उनमें राजस्थान के महात्मा कालूराम योगी, स्वामी नित्यानन्द ब्रह्मचारी तथा अशेष वैदुष्यसम्पन्न पं० गणपति शर्मा के नाम शीर्षस्थ हैं। स्वल्प जीवनकाल में जिन्होंने अपनी अनुपम विद्वत्ता, वाग्मिता तथा दुर्लभ तर्कवैभव से आर्य जगत को विस्मय विमुग्ध कर दिया था, उन पं० गणपति शर्मा को नई पीढ़ी के लोगों ने चाहे भुला दिया हो, किन्तु वे वैदिक धर्म-प्रचार के भवन की नींव के पत्थर तुल्य थे, जिसके महत्व को अनुभव तो किया जा सकता है, किन्तु जिसे देखा नहीं जा सकता।

पं० गणपति का जन्म भूतपूर्व बीकानेर राज्य के अन्तर्गत चूरू नामक नगर में वि० सं० १९३० (१८७३ ई०) में पं० भानीराम नामक पाराशर गोत्रीय पारीक ब्राह्मण के यहां हुआ। इनके पिता पौरोहित्य के साथ-साथ वैद्यक भी करते थे। वे ईश्वरभक्त तथा आस्तिक शास्त्रों के प्रति निष्ठा रखने वाले थे। पिता की यह आस्तिक वृत्ति ही आगे चलकर पं० गणपति शर्मा में मृत्यु पर्यन्त रही। ईश्वर-भक्ति और आस्तिक भावना ही उनके व्याख्यानों के प्रधान विषय होते थे। अपने व्याख्यानों में जब वे भाव-विहल होकर जगन्नियन्ता के अस्तित्व की सिद्धि का पाण्डित्य पूर्ण विवेचन करते, तो भावुक श्रोता मन्त्र-मुग्ध हो जाते। इसी प्रकार वेदों की अपौरुषेयता पर भी उनके प्रभावशाली प्रवचन होते थे। युक्ति एवं पुष्ट तर्कों से परिपूर्ण इन व्याख्यानों को सुनकर बड़े-बड़े दम्भी नास्तिकों का भी गर्व गलित हो जाता था। उनकी वाग्मिता तथा तर्कशक्ति का परिचय आर्य जनता को तब मिला, जब १९६० वि० के गुरुकुल कांगड़ी के वार्षिकोत्सव पर उनकी प्रभावशाली वक्तृता ने श्रोतृ-समुदाय को चमत्कृत कर दिया। जिस युग में लाउडस्पीकरों का प्रयोग नहीं होता था, उस समय दस-पन्द्रह हजार श्रोताओं के समुदाय में निरन्तर चार-पांच घण्टों तक ओजस्विनी वाणी में धारा प्रवाह व्याख्यान देना पं० गणपति शर्मा जैसे अद्भुत व्यग्मी का ही काम था। जिस समय आर्यसमाजों के उत्सवों में अन्य विद्वानों के व्याख्यान सुनते-सुनते जनता ऊब जाती, उस समय पं० गणपति शर्मा के व्याख्यान की घोषणा सुनते ही लोगों में पुनः स्फूर्ति आ जाती और वे धैर्यपूर्वक पण्डितजी की रोचक एवं अर्थगर्भित वक्तृता सुनते।

वे शास्त्रार्थ कला में भी अद्वितीय थे। उनकी शास्त्रार्थ-पद्धति में विपक्षी पर कटूक्तियों की वर्षा करने, असद् व्यवहार अथवा व्यंग्य, कटाक्ष आदि का सर्वथा अभाव रहता था। यही कारण था कि अन्य मतों के विद्वान भी उनके सौजन्य, शिष्ट व्यवहार तथा आर्यत्व से प्रभावित होकर चिरक. ाल के लिए उनसे मैत्री सूत्र में बंध जाते थे। एक बार गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के उत्सव पर पादरी जे.बी. फ्रैंस से उनका शास्त्रार्थ हुआ। यद्यपि पादरी साहब को अपने पक्ष को सत्य सिद्ध करने में तो सफलता नहीं मिली, किन्तु वे पं. गणपति के सद्व्यवहार से इतने प्रभावित हुए कि आजीवन उनके मित्र बन गये।

पं. गणपति शास्त्रार्थ समर में कूदने के लिए प्रतिक्षण लालायित रहते थे। उनका प्रतिपक्षी जितना प्रबल होता, शास्त्रार्थ के प्रति उनका उत्साह उतना ही बढ़ जाता।

यहां उनकी शास्त्रार्थ सभाओं के कुछ रोचक प्रसंगों में से काश्मीर शास्त्रार्थ वर्णन किया जा रहा है।

एक बार पण्डितजी काश्मीर की प्रचार यात्रा में थे। उन दिनों अपनी संस्कृत विद्या से गर्वित पादरी जानसन भी श्रीनगर आया हुआ था। उसने काश्मीरी पण्डितों को वेदान्त पर शास्त्रार्थ करने के लिए ललकारा। वह शारदा देश (काश्मीर) जो किसी समय कैयट, वज्रट, रुद्र, मम्मट, डल्हण, कल्हण और बिल्हण जैसे पण्डितों की जन्मभूमि होने के कारण सारस्वत संसार में सुख्यात था, आज विद्या की दृष्टि से सर्वथा पिछड़ चुका था। मुस्लिम आचार-विचार, खान-पान, वेषभूषा को सर्वतोभावेन अपनाये हुए, नाममात्र के पण्डित इन कौल, काक, काटजू, कुंजरू, किचलू आदि से क्या आशा की जा सकती थी, कि वे उस अंग्रेज पादरी से शास्त्रार्थ करने के लिए आगे आते, जो शास्त्रों का अच्छा जानकर तो था ही, धारा प्रवाह संस्कृत भी बोलता था। उसने काशी, कांची तथा कुम्भकोणम् जैसे विद्या-स्थानों पर बसने वाले पण्डितों को शास्त्रार्थ के लिए आहूत किया था। कहते हैं कि एक बार कुम्भकोणम् में अवश्य उसे मुंह की खानी पड़ी थी क्योंकि वहां के पण्डितों ने त्रिविधार्थ का बोध कराने वाली शब्दावली का प्रयोग कर उसे उलझन में डाल दिया था। अन्यत्र तो उसका ही पलड़ा भारी रहा था।

जब काश्मीरी पण्डितों को पादरी के सामने आने का साहस नहीं हुआ तो महाराजा प्रतापसिंह (काश्मीर नरेश) बड़े चिन्तित हुए और सोचने लगे कि क्या काश्मीर की नाक कट जायेगी और उन्हें पादरी जानसन को दिग्विजयी होने का प्रमाण पत्र देना पड़ेगा, क्योंकि जानसन ने उन्हें कह दिया था कि या तो स्थानीय पण्डित उसे परा. जित करें और ऐसा न होने पर उसे विजयी होने का लिखित प्रमाण-पत्र दिया जाये। इस विषम स्थिति में किसी ने महाराजा को बताया कि इस समय आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान पं. गणपति शर्मा राजधानी में आये हुए हैं और आर्यसमाज हजूरी बाग में ठहरे हुए हैं। यदि वे पादरी से शास्त्रार्थ करें तो उसे अवश्य पराजित कर देंगे। किसी सनातनी पण्डित को यह विचार नहीं रुचा और उसने कहा, "महाराज, गणपति तो कट्टर आर्यसमाजी हैं।" महाराजा ने उसकी इस आपत्ति को अस्वीकार कर दिया और गणपति शर्मा शास्त्रार्थ के लिए सादर बुलाये गये। अब दोनों महारथियों का जिस प्रकार साम्मुख्य हुआ उसका विवरण पं. नरदेव शास्त्री ने इस प्रकार दिया है-

जानसन- हम आपसे शास्त्रार्थ करने आये हैं।

गणपति- पहले आप यह बताइये कि शास्त्रार्थ शब्द का क्या अर्थ है? क्या शास्त्र से आपका मतलब सांख्यादि छः शास्त्रों से है और क्या आपको यह भी ज्ञात है कि 'अर्थ' शब्द के भी अनेक अर्थ हैं। अर्थ अर्थात् धन, अर्थ अर्थात् प्रयोजन, एक 'अर्थ' पुरुषार्थ-चातुष्टय में भी है। शास्त्र के भी अनेक अर्थ हैं- धर्म शास्त्र, अर्थ शास्त्र, नीति शास्त्र, दर्शन शास्त्र आदि। हमें बतायें कि आप किस 'शास्त्र' का अर्थ करने आये है।

जानसन (हतप्रभ होकर)- हम इसका उत्तर नहीं दे सकेंगे। महाराज ने इस पर हस्तक्षेप करते हुए कहा कि पादरी साहब उत्तर तो देना ही पड़ेगा। किन्तु जानसन ने सर्वथा मौन साध लिया और नरेश ने पं. गणपति शर्मा को विजयी घोषित कर दिया।

अब महाराजा के बोलने की बारी आई। उन्होंने पण्डितजी से पूछा- क्या आप सचमुच आर्यसमाजी हैं? शायद वे सोचते थे कि मेरे पूछने पर वे संकोचवश अपने को आर्यसमाजी कहने से इन्कार कर देंगे। किन्तु पं. गणपति शर्मा की वैचारिक आस्था सुदृढ़ थी। उन्होंने स्पष्ट उत्तर दिया, 'हां महाराज, मैं तो आर्यसमाजी हूँ।' उनकी इस स्पष्टोक्ति पर थोड़ा क्षोभ प्रकट करते हुए काश्मीर नरेश बोल पड़े 'बस यही खराबी है। आप जैसे पण्डित को तो सनातनी होना चाहिए था।' फिर भी कृतज्ञता प्रकट करते हुए महाराजा ने कहा कि आज आपने काश्मीर की प्रतिष्ठा की रक्षा कर ली। महाराजा ने पं. गणपति शर्मा के वैदुष्य तथा वाग् वैभव से प्रसन्न होकर उन्हें ५०० रुपये की नकद राशि तथा बहुमूल्य शाल भेंट कर सम्मानित किया।

## स्वास्थ्य गोष्ठी-एक्यूप्रेशन विधि

मनुष्य के हाथ-पैर से लेकर सिर तक अनेक तत्वों का समावेश है। पांच उगलियां, पंजा आदि में रोगों के निदान की महाऔषधी है। यहां पहले यह जानना आवश्यक है- अंगुष्ठ-अग्नि, तर्जनी-वायु, मध्यमा-आकाश, अनामिका-पृथ्वी, कनिष्का-जल।

बीमारी - तनाव, चिड़चिड़ापन गुस्सा, नेत्र रोग, उपाय/क्रिया- अग्नि और वायु को दबाने से (योगमुद्रा, ज्ञानमुद्रा, शान्तमुद्रा, अग्नि जल पृथ्वी को संयुक्त दबाने से वायु की जड़ को दबाने से, आंख की भौए के नीचे गढ़ढे व मौसे एवं आंख के नीचे दबाने से, साथ ही अमृतांगनर प्रातः लाव आंखों में लगाने से) घी के दीपक को एक टक निहारने से।

कान- जल (कनिष्का) को कानों में डालकर 1 मिनट तक प्रतिदिन घुमाना, मध्यमा को अंगूष्ठ की जड़ दबाना

दांत- रात को सोने से पहले नित्य ब्रूश करना, पानी में सैंधा नमक डालकर कुल्ला करना, प्रातः सैंधा नमक व सरसों के तेल से गंजन।

हार्ट-अटैक- अग्नि, आकाश और पृथ्वी को संयुक्त दबाना, हाई,बी0पी0 होने पर पृथ्वी के अग्रभाग को दबाना।

थाईराइट- आकाश से अग्नि की जड़ को दबाना, उज्जाई क्रिया करना।

नेत्र- रात्रि में रूक-रूक कर तीन बार नाभि में सरसों का तेल लगाना, मुंह में पानी भरकर नेत्र धोना।

गैस, अपच, बाबासीर- अग्नि $ आकाश $ पृथ्वी व वायु को संयुक्त दबाना, कलाई को दबाना, रात्रि में सोने से पूर्व त्रिफला चूर्ण लेना भोजन उपरान्त बज्रासन में बैठना, खाने में अजवायन का प्रयोग, मिर्च से परहेज।

घुटनों में दर्द, गठिया- वायु को अग्नि की जड़ में दबाना

शुगर- दो हाथों की बीच हथेली को अग्नि से रगड़ना, पैदल टहलना, शारीरिक परिश्रम

जुखाम- हाथों की उंगलियों के सभी पौरूएं दबाना, नाक की जड़ की दबाव के साथ धीरे-धीरे रगड़ना।

बुखार- उगलियों को अन्दर साईड से दबाना

सिर दर्द- अग्नि के अग्रभाग को दबाना

कमर दर्द- अंगूठे के ऊपर भाग से कलाई तक दबाना।

घुटना दर्द- पृथ्वी की बीच की गांठ को दबाना

हाई व निम्न बी0पी0- हाई होने पर पृथ्वी के अग्रभाग व निम्न होने पर मध्यम का अग्रभाग दबाना।

रमेश आर्य (एडवोकेट)
9412310768

## आर्य समाज का चुनाव सम्पन्न

राड़धना (मेरठ) सुरेन्द्रपाल आर्य औरंगनगर। आर्य समाज का दो दिवसीय वार्षिक उत्सव धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर वैदिक विद्वान सच्चिदानन्द (जयपुर) ने अपने उद्बोधन में कहा कि संस्कार हमारी श्रेष्ठता के कारण हैं जिनका बीजारोपण गर्भकाल से प्रारम्भ होता है जो जीवन भर चलते हैं। जो संस्कार माता गर्भ में दे देती है, वह किसी विश्वविद्यालय में भी नहीं मिलते। शिक्षित संस्कारी माता यह संस्कार दे सकती है।

इस अवसर पर भजनोपदेशक सत्यमणी (हिसार) के भजनों ने सुन्दर समां बांधा। उत्सव में इंजी0 मोहित ने अपने संबोधन में कहा कि आर्य समाज एवं ज्ञानेन्द्र आर्य उपमंत्री उ0प्र0 प्रतिनिधि सभा ने भी विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम में राजसिंह आर्य, रवीन्द्रपाल, धीरज सिंह, तथा सुरेन्द्रपाल आर्य सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालु नर-नारियों व बच्चों ने भाग लिया।

## देवराज सिंह प्रधान व डॉ0 सुमित बने मंत्री

धनौरा (डॉ0 सुमित अग्रवाल)। आर्यसमाज के द्विवार्षिक निर्वाचन में सर्वसम्मति से सुरेश चन्द्र गुप्ता- संरक्षक, देवराज सिंह आर्य- प्रधान, अधिवक्ता मदनपाल सिंह सैन- उपप्रधान, डॉ0 सुमित अग्रवाल- मंत्री, ब्रह्मदेव सिंह आर्य- कोषाध्यक्ष, पं0 पुष्पेन्द्र शास्त्री- अधिष्ठाता, अधिवक्ता अनिल कुमार शर्मा- विधिक सलाहकार चुने गये। इस बैठक में यह भी कहा गया कि इसी प्रकार से स्त्री आर्य समाज के गठन का भी प्रयास किया जाए। इसी के साथ भविष्य में वर्तमान हॉल कक्ष एवं यज्ञशाला के जीर्णोद्धार करवाने का संकल्प भी व्यक्त किया गया।

## यूं तो कितने ही महापुरुष हुए दुनिया में
## कोई गुरुदेव दयानन्द को देखा न सुना

(प्रकाश कवि रत्न)

# आओ चलें ऋषि दयानंद की पावन जन्म भूमि टंकारा

# यह चल रहे हैं अनेक प्रकल्प

ऋषि जन्म भूमि टंकारा परिसर में आपका हार्दिक स्वागत है

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना)
रामनाथ सहगल (मंत्री)
श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट, टंकारा, राजकोट-363650, गुजरात।
दूरभाष नं0- 02822-287756

## टंकारा गौशाला में गौ-पालन एवं पोषण हेतु अपील

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा स्थित गौशाला में दान स्वरूप प्राप्त गौ से जहा एक ओर ब्रह्मचारियों हेतु दूध प्राप्त हो रहा है, वही बढ़ती गायों के पालन पोषण हेतु ट्रस्ट पर आर्थिक बोझ पड़ रहा है। आपकी जानकारी हेतु गौशाला से प्राप्त दूध को बेचा नहीं जा सकता। ऐसी स्थिति में आप सभी आर्यजनों, दानदाताओं, गौभक्तों से प्रार्थना है कि इस मद में ट्रस्ट की सहायता करने की कृपा करें। एक गाय के वार्षिक पालन-पोषण पर 7000/- रुपए व्यय आ रहा है, जिससे हरा चारा एवं पोष्टिक आहार जो चारे में मिलाया जाता है तथा गौशाला का रखरखाव सम्मिलित है। आप सभी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार राशि भेजकर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा के नाम चैक/ड्राफ्ट द्वारा केवल खाते में

**आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001**

पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

## डॉ0, मुमुक्षु आर्य गुरू विरजानन्द सरस्वती पुरस्कार

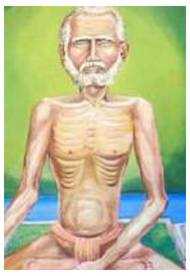

समस्त गुरूकुलों के विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि टंकारा में प्रतिवर्ष ऋषि बोधोत्सव पर डॉ0 मुमुक्षु आर्य गुरू विरजानन्द सरस्वती पुरस्कार उस विद्यार्थी को दिया जायेगा जिसके योगदर्शन के समस्त 195 सूत्र एवं यजुर्वेद के 40वें अध्याय के सब मन्त्र शुद्ध उच्चारण व अर्थ सहित कंठस्थ होंगे। जो ब्रह्मचारी इस प्रतियोगिता में भाग लेना चाहते हैं वे अपना नाम अपने गुरूकुल के आचार्य के माध्यम से टंकारा गुरूकुल के आचार्य को शीघ्र भेज दें। प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले ब्रह्मचारी को पांच हजार रुपए नगद व स्मृति चिन्ह से पुरस्कृत किया जायेगा।

### सम्पर्क सूत्र-श्री आचार्य रामदेव

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट, टंकारा, राजकोट-363650, गुजरात। दूरभाष नं0- 02822-287756

## गौ-दानः महा-दान

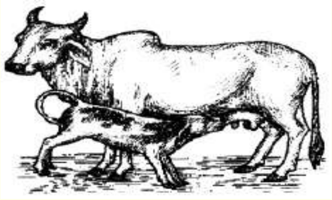

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा संचालित अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय में ब्रह्मचारियों की दिन-प्रतिदिन बढ़ती संख्या के कारण टंकारा स्थित गौशाला से प्राप्त दूध ब्रह्मचारियों हेतु प्रर्याप्त नहीं हो पा रहा है। इस कारण ट्रस्ट ने यह निश्चय किया है कि तुरन्त नयी गायों को खरीद लिया जाये ताकि ब्रह्मचारियों को प्रर्याप्त मात्रा में दूध उपलब्ध कराया जा सके।

टंकारा स्थित गौशाला हेतु भारत के असंख्य आर्य परिवारों एवं आर्य संस्थाओं की ओर से 20,000/- रुपए प्रति गाये हेतु धनराशि प्राप्त हो रही है। गुरूकुल में ब्रह्मचारियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए एवं कच्छ में गरम वातावरण होने के कारण गौओं का कम दूध देने के कारण अभी भी गायों की आवश्यकता है। दानी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार आहुति डालकर पुर्ण्यजन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा के नाम चैक/ड्राफ्ट द्वारा केवल खाते में

आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

## एक प्रेरणा

**परिवार के एक बालक को गुरूकुल में पढ़ाए अथवा गुरूकुल में एक ब्रह्मचारी का वार्षिक व्यय देवें।**

अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा, जहां इस समय 125 ब्रह्मचारी अध्ययनरत हैं। जिन्हें वैदिक मान्यताओं के प्रचार एवं कर्मकाण्डीय संस्कारों हेतु तैयार किया जाता है। पाश्चात्य सभ्यता को मुंहतोड़ उत्तर देने के लिए यह आवश्यक है कि सुयोग्य धमार्चार्यो की संख्या अधिक से अधिक हो और हमारा युवा वर्ग इनके संदर्भ में आवे और वह अपनी मूल सभ्यता से जुड़े। आप सभी दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि अपनी आने वाली पीढ़ी को वैदिक संस्कारों से ओत-प्रोत करने हेतु इन ब्रह्मचारियों के एक वर्ष के अध्ययन का व्यय दान स्वरूप ट्रस्ट को दें। यह ऋषि ऋण से उऋण होने में आपकी आहुति होगी।

*एक ब्रह्मचारी का एक वर्ष का अध्ययन/वस्त्र/खानपान का व्यय 12,000/- रू0 है।*

**आपसे प्रार्थना है कि अपनी ओर से अथवा अपनी संस्थाओं की ओर से कम से कम एक ब्रह्मचारी के अध्ययन व्यय की सहयोग राशि श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा के नाम चैक/ड्राफ्ट केवल खाते में दिल्ली कार्यालय के पते पर भिजवाकर पुण्यार्जन करें।**

टंकारा समाचार के आजीवन सदस्य बनें और जानें टंकारा सहित देश विदेश में होने वाली आर्य समाज की गतिविधियों के समाचार

# ऋषि जन्मस्थान के सहयोगी सदस्य बनें

आर्य समाज के ऐतिहासिक स्थलों टंकारा (ऋषि जन्मस्थान) का एक विशेष महत्व है। प्रतिवर्ष शिवरात्रि के दिन ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर ऋषि भक्त यहां पधारते हैं। प्रत्येक ऋषि भक्त अपनी श्रद्धा और विश्वास के साथ यहां अपनी श्रद्धांजलि उस ऋषि को देते हैं। कुछ ऋषि भक्त यहां कई वर्षो से पधार रहे हैं यह भी उस ऋषि के प्रति श्रद्धा का रूप है। ऋषि भक्त आग्रह करते हैं कि इस स्थान से कैसे जुड़ा जाए जिससे ऋषि घर से आत्मीयता बनी रहे। पिछले वर्ष ट्रस्ट ने निर्णय लिया कि वार्षिक सहयोग सदस्य बनाए जाएं। प्रत्येक इच्छुक ऋषि भक्त प्रतिवर्ष 1000/- रुपए देकर सहयोगी सदस्य बन सकते हैं। इसकी सहयोग राशि की स्थिर निधि बनाई जाए और उसके ब्याज को ट्रस्ट गतिविधियों में लगाया जाए। एक करोड़ की इस स्थिर निधि के अधिक से अधिक सहयोगी सदस्य बनकर/ बनाकर ऋषि जन्मस्थान से जुड़ सकते हैं। 10000 सदस्य पूरे भारत में बनाने का लक्ष्य है।

## वैवाहिक वर्षगांठ की हार्दिक शुभकामनाएं

**स्मित एवं रेखा**
दिनांक लखनऊ

**तपन एवं रूचि**
4 दिसम्बर, बंग्लुरू

**अनिल एवं उषा**
25 जनवरी, रेवाड़ी

**समर एवं सौम्या**
30 जनवरी, लखनऊ

**शेफाली एवं नितिन**
13 दिसम्बर, लखनऊ

**डॉ0 बीना एवं डॉ0 अशोक आर्य**
7 फरवरी, अमरोहा

**राखी एवं अनिल नागर**
मेरठ

**तुषार एवं छवि**
13 फरवरी, बंग्लुरू

**तन्वी एवं आशीष**
8 फरवरी

**गार्गी एवं हर्षुल दत्त**
22 फरवरी, महेन्द्रगढ़

# हार्दिक बधाई

**डॉ0 सुनील कुमार जोशी**
मर्म चिकित्सा विशेषज्ञ
5 माँ आनंदमयी पुरम कनखल हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

को उत्तराखण्ड आयुर्वेद विश्वविद्यालय देहरादून के नये कार्यवाहक कुलपति बनने पर आर्यावर्त केसरी परिवार की ओर से बधाई


## अवश्य पढ़ें - आज ही मंगाए

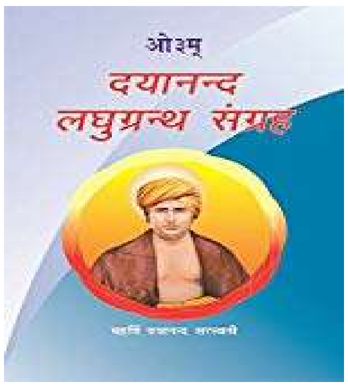


आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा द्वारा प्रकाशित संग्रहणीय पुस्तक
दयानन्द लघुग्रन्थ संग्रह
इसमें महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत इन पांच पुस्तकों का संग्रह है-
**पंचमहायज्ञविधि**
**आर्योद्देश्यरत्नमाला**
**गोकुरूणानिधि**
**व्यवहारभानु**
**आर्याभिविनयः**
पुस्तकें वी0वी0पी0 रजिस्टर्ड डाक, रेलवे तथा ट्रांसपोर्ट से भेजी जा सकती है। अधिक मांगने पर विशेष छूट उपलब्ध है। पता- आर्यावर्त प्रकाशन, सौम्या सदन, गोकुल विहार, अमरोहा-244221 (उ.प्र.) सम्पर्क सूत्र - 09412139333


## ऐसे करते हैं वेद प्रचार

भोला पहाड़ी आर्य ने बांटी आर्य समाज की विचारधारा व सत्यार्थ प्रकाश क्यों पढ़ें एक-एक हजार लघु पुस्तिकाएं व पत्रक

श्रीमती एवं श्री नरेन्द्र बंसल आर्य वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर, हरिद्वार आर्यावर्त केसरी के प्रचार प्रसार में पूर्ण मनोयोग से लगे हैं। हम इनके दीर्घ आयुष्य, सुस्वास्थ्य व उज्वल भविष्य की मंगल कामना करते हैं। - सम्पादक

आर्यावर्त प्रकाशन अमरोहा द्वारा प्रकाशित योग, यौवन और प्रकृति पर्यावरण पुस्तक का दिग्दर्शन कराते लेखक श्रीमती एवं श्री वी0के0 बहल, दिल्ली। हार्दिक बधाई

## जन्म दिवस की शुभकामनाएं

**हिमांशी पंत**
23 जनवरी, लखनऊ

**अनिल रस्तोगी**
3 जनवरी, बदायूं

**कृष्ण कुमार रस्तोगी**
1 जनवरी, शमशाबाद

अपने परिजनों को जन्म दिन/वैवाहिक वर्षगांठ व ऐसे ही अन्य शुभ अवसरों पर शुभकामनाएं भेजें
-सम्पादक

# आर्यसमाज गांधीधाम का 67 वां वार्षिकोत्सव हर्षोल्लास के साथ संपन्न

गुजरात प्रांत की गांधीधाम में स्थित अग्रणी जीवन्त आर्यसमाज का 66 वां तीन दिवसीय वार्षिकोत्सव दिनांक 15 दिसंबर को शुभ संकल्पों के साथ संपन्न हो गया। इस महोत्सव में विश्व भर के आर्य जन पधारें। मुंबई से आर्यसमाज के मूर्धन्य विद्वान डॉ सोमदेव शास्त्री जी का वैज्ञानिक प्रवचन हुआ वहीं उत्तर प्रदेश बदायूं से समागत सरस वेद कथाकार युवा विद्वान आचार्य संजीव रूप के सरस प्रवचन हुए, गुरुकुल पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी की प्राचार्य नंदनी शास्त्री जी ने गुरुकुल की कन्याओं के साथ यज्ञ कराया। कार्यक्रम का संचालन आर्यसमाज गांधीधाम के प्रधान आचार्य वाचोनिधि जी ने किया। तथा श्रीमती विमला देवी जांगिड़ गुरुदत्त शर्मा, मोहन जांगिड़ आचार्य विश्वप्रिय आर्य ने बाहर से आए हुए आर्यजनों का अभिनंदन किया। मुख्य अतिथि साउथ अफ्रीका से पधारे श्री दयानंद आर्य रहे

## मुस्लिम देशों में भी होती है अग्नि पूजा

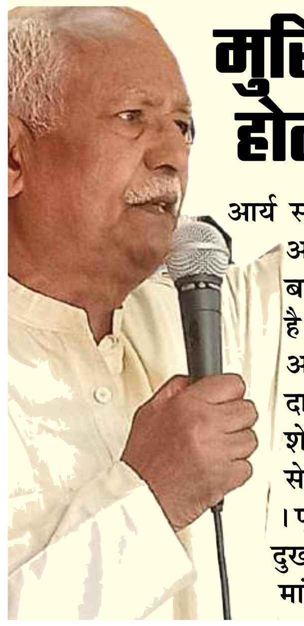

आर्य समाज के उत्सव में मुख्य अतिथि साउथ अफ्रीका से पधारे श्री दयानंद आर्य जी ने बताया कि रूस के कुछ मुस्लिम देश ऐसे भी है जहां फायर टेंपल है और जहां के लोग अग्नि जलाकर उसमें हवन करते हैं कोई दाढ़ी नहीं रखता टोपी नहीं पहनता ,क्लीन शेव रहते हैं कोई पर्दा प्रथा नहीं, कोई मस्जिद से अजान नहीं सब मजहबी बंधन से मुक्त है । पूरा विश्व शाकाहार की ओर बढ़ रहा है पर दुख है शाकाहारी राम व कृष्ण का देश भारत मांसाहार की ओर बढ़ता चला जाता है

## मंत्रमुग्ध हुए श्रद्धालु

बदायूं उत्तर प्रदेश से पधारे युवा विद्वान आचार्य संजीव रूप ने सरस प्रवचन कर सभी श्रद्धालुओं को मोह लिया। उन्होंने संकल्प कराते हुए कहां जब तक बुराइयां नहीं छोड़ेंगे तब तक सत्संग का लाभ प्राप्त नहीं होगा । उन्होंने पांच महायज्ञ नित्य करने का संकल्प भी कराया कहा कि संकल्प करो प्रतिदिन सुबह शाम एक घंटा आत्म कल्याण हेतु परमेश्वर की उपासना करेंगे, प्रतिदिन दोनों समय पर्यावरण की शुद्धि व रोग शोक निवारण हेतु हवन करेंगे। प्रतिदिन अपने बड़ों बुजुर्गों का अभिवादन व अभिनंदन करेंगे। संतो विद्वानों का सदा सम्मान करेंगे। भोजन करने से पहले उसका एक भाग दान करेंगे। गाय कुत्ता कौवा आदि व भूखे प्यासे कमजोर लोगों का भी सहारा बनेगे। सत्यार्थ प्रकाश ग्रंथ का नित्य स्वाध्याय करेंगे।

## आर्यसमाज गांधीधाम के 66 वें वार्षिक उत्सव की कुछ विशेष झलकियां

### बहुत ही अच्छे ढंग से सजाया गया मंदिर!

आर्य समाज मंदिर को बहुत ही सुंदर ढंग से सजाया गया जिसमें सभी श्रद्धालुओं के भोजन व आवास की अति उत्तम व्यवस्था थी! नगर भर में सुंदर होर्डिंग लगाए गए

### यज्ञ में अनेक श्रद्धालु बने यजमान

अनेक दंपत्ति यजमान बने तथा राष्ट्र कल्याण व विश्व शांति की कामना के साथ आहुतियां दी! 3 कुंडीय यज्ञ हुआ ! आचार्य नंदिता जी व उनकी छात्राओं ने अत्यंत सुंदर वेद पाठ किया तथा भजन भी गाए!

### सभी विद्वानों ने नागरिकता बिल का किया सम्मान

पूरे सदन ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की प्रशंसा की तथा कश्मीर से धारा 370 35 हटाने, 3 तलाक हटाने, नागरिक संशोधन बिल लाने का समर्थन किया और शीघ्र ही दो बच्चों का कानून बनाने की अपील की।

### फलित ज्योतिष अभिशाप

मुंबई से पधारे वैदिक विद्वान डॉ सोमदेव शास्त्री ने कहा के गणित ज्योतिष वरदान है वहीं फलित ज्योतिष अभिषाप है ! फलित ज्योतिष के चलते हमारे समाज में अनेक बुराइयां उत्पन्न हुई वही देश को इस बीमारी ने दुर्बल भी बनाया है सूर्य पृथ्वी से 13 लाख गुना बड़ा है वहीं ज्येष्ठा नक्षत्र सूर्य से भी दो करोड़ गुना बड़ा है विचारणीय है कि अत्यंत दूर व वृहद इन ग्रह नक्षत्रों का किसी धरती पर रहने वाले व्यक्ति से क्या संबंध हो सकता है ? ग्रह नक्षत्र तो अपनी गति से भ्रमण कर रहे हैं वह हमारे लिए सुखदाई तो हो सकते

कार्यक्रम में उपस्थित डॉ0 संजीव रूप, डॉ0 सोमदेव शास्त्री व डॉ0 नन्दिता दास

## गुजरात के गांधीधाम में सम्मानित हुए आचार्य संजीव रूप सहित अन्य आचार्यगण

गांधीधाम आर्यसमाज में उत्तर प्रदेश बदायूं से समागत सरस वेद कथाकार युवा विद्वान आचार्य संजीव रूप के सरस प्रवचन हुए, आर्यसमाज गांधीधाम के प्रधान आचार्य वाचोनिधि जी , श्रीमती विमला देवी जांगिड़ गुरुदत्त शर्मा, मोहन जांगिड़ आचार्य विश्वप्रिय आर्य ने उनका अभिनंदन किया । मुख्य अतिथि साउथ अफ्रीका से पधारे श्री दयानंद आर्य ने उन्हें अफ्रीका आने का न्योता दिया। युवा विद्वान आचार्य संजीव रूप ने सरस प्रवचन कर सभी श्रद्धालुओं को मोह लिया। उन्होंने संकल्प कराते हुए कहां जब तक बुराइयां नहीं छोड़ेंगे तब तक सत्संग का लाभ प्राप्त नहीं होगा । उन्होंने पांच महायज्ञ नित्य करने का संकल्प भी कराया। गुरूकुल की ब्राह्मणियों ने सस्वर वेद पाठकर किया मंत्रमुग्ध। आचार्य वाचोनिधि आर्य व कुलपति गिरीश खोसला सहित सभी ट्रस्टीगण पूर्ण मनोयोग से समर्पित हैं। भुज ने 2001 में आये विनाशकारी भूकम्प के बाद यहां आर्य समाज ने रचा एक नया इतिहास।

## आर्य समाज- गांधीधाम (गुजरात)

### अर्थात् विश्व की एकं अनूठी एवं जीवन्त आर्य समाज

### उत्कृष्ट सेवा के सात दशक

- १९४८ में आर्य समाज गांधीधाम की गुजरात में स्थापना।
- २००१ में भुज में आए भयानक भूकम्प में निराश्रित हुए बच्चों के लिए जीवन प्रभात प्रकल्प की स्थापना।
- वर्तमान में यहां २०० बालक, बालिकाओं का हो रहा है पालन-पोषण।
- देखने योग्य है जीवन प्रभात प्रकल्प का भव्य परिसर।
- यहां निर्मित है भव्य यज्ञशाला, ध्यानकेन्द्र, संगीत कक्ष, जिम, समृद्ध पुस्तकालय, हस्तकला एवं हस्तशिल्प कक्ष, कम्प्यूटर कक्ष, भव्य एवं विशाल गऊशाला, जहां हैं बच्चों के लिए शुद्ध गोधृत एवं दुग्ध की आपूर्ति के लिए उच्चस्तरीय नस्ल की ३५ देशी गाएं।
- विशाल एवं भव्य डीएवी पब्लिक स्कूल।
- यहां प्रतिवर्ष सैकड़ों की संख्या में पधारती हैं देशी व विदेशी हस्तियां, जिनमें प्रमुख हैं भारत के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, राज्यपाल, मुख्यमंत्री, अनेक केन्द्रीय तथा प्रान्तीय मंत्री, राजनेता, उच्चाधिकारी, आध्यात्मिक विभूतियां संन्यासी, विद्वान आदि।
- यह है पूर्णरूपेण कम्प्यूटरीकृत चौबीस घण्टे कार्य करने वाली विश्व की अनूठी एवं जीवन्त आर्य समाज।
- काण्डला पोर्ट ट्रस्ट द्वारा दानस्वरूप प्रदत्त चार एकड़ भूमि में से दो एकड़ में बना है भव्य भवन तथा दो एकड़ भूमि में फैला है महर्षि दयानन्द उपवन एवं भव्य पार्क।
- प्राकृतिक एवं भौतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण है सम्पूर्ण परिसर। देखते ही बनती है परिसर की छटा।
- आर्य समाज के सभी ट्रस्टी जीवन प्रभात प्रकल्प को 'अनाथालय नहीं वरन् सनाथालय' बनाने के लिए हैं कृत संकल्प।
- बिना देखे सम्भव नहीं आर्य समाज जीवन प्रभात की आध्यात्मिक, भौतिक सौंदर्य की परिकल्पना। देखकर ही करें विश्वास।
- २००४ में दक्षिण भारत में आयी सुनामी के पीड़ितों के पालन-पोषण के लिए निर्मित किया है जीवन प्रभात प्रकल्प पाण्डिचेरी, जहां ४८ बच्चों की हो रही है देखभाल।
- नियमित चलती हैं योग कक्षाएं।
- सुविधापूर्ण ऑडिटोरियम युक्त है विशाल वैदिक संस्कार केन्द्र।
- १९९७ से यहां स्थापित है मैडिकल ऑक्सीजन बैंक।
- ११ एकड़ भूमि पर प्रस्तावित है, शैक्षणिक शंकुल।
- उच्च स्तरीय लालन-पालन के साथ ही गुजरात के श्रेष्ठ संस्थानों से यहां के बच्चे कर रहे हैं अध्ययन।

आर्य समाज गांधीधाम को दिया गया दान आयकर की धारा ८० जी के अन्तर्गत ५० प्रतिशत करमुक्त है तथा २५ हजार से अधिक दान देने पर आयकर की धारा ३५ एसी के अन्तर्गत १०० प्रतिशत करमुक्त है। आइए, आर्य समाज जीवन प्रभात के प्रकल्प से जुड़िए और मानवता के इस महान कार्य में अपना बहुमूल्य योगदान दीजिए।

# आयकर रिटर्न भरने के व्यक्तिगत लाभ के साथ, देशहित भी

आर्यावर्त केसरी के प्रबुद्ध पाठको, काफी समय से मेरे मन में विचार आ रहा था कि इस पाक्षिक पत्रिका/समाचारपत्र के द्वारा जहां एक ओर हमें अनेक महापुरुषों के जीवन-वृत्तांत, वेदज्ञान सेवाकार्यों का वर्णन पढ़ने से हमारे अनमोल जीवन में प्रेरणा द्वारा इहलोक व पारलोकिक जीवन का विकास होता है, वहीं उपरोक्त विषय पर प्रकट करके आप सबको देशहित के साथ, अनेक व्यक्तिगत लाभ भी होते हैं, जैसे-

(1) मन की शांति- मुझे कभी आयकर विभाग से नोटिस न मिल जाए, जिसका मैं कुछ संतोषजनक उत्तर न दे सकूं। कहीं मेरे बैंक एकाउण्ट सील न हो जाएं आदि-आदि से मुक्त।

(2) पुण्यकार्य में भागीदारी- हमारी सरकार समाज के गरीब, दुर्बल जनों की अनेक प्रकार से सहायता हमारे आयकर से ही करती है, जैसे- सड़क बनवाना, स्कूल/कालेज में शिक्षा व्यवस्था, अस्पतालों में चिकित्सा, शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों में सड़कों पर स्ट्रीट लाइट, कानून व्यवस्था के लिए पुलिस और न्यायाधीश व्यवस्था, गौशाला, अनाथालय, वृद्धाश्रम बनवाना आदि।

(3) देश की शत्रु से सुरक्षा- हमारे पास सांसारिक सुख की समस्त चीजें हों, परन्तु हमारा समाज व देश ही सुरक्षित न हो तो क्या हम शांतिपूर्वक अपना जीवन व्यतीत कर सकते हैं? नहीं। हम आयकर देकर देश के शहीदों के परिवारों की भी सहायता करते हैं।

(4) मनुष्य जीवन की सार्थकता- आयकर की बचत करने के लिए यदि हम किसी राजकीय अथवा गैर राजकीय संस्थान को सामाजिक कार्य करने के लिए दान देते हैं, तो इस पर आयकर की धारा 80 (जी) के अन्तर्गत आयकर बचत भी होती है तथा मनुष्य जीवन में पुण्यकार्य (दूसरे की सहायता द्वारा) भी होता है।

(5) परिवार के व्यक्तियों के लिए चिकित्सा एवं जीवन बीमा लेने की आदत- आयकर भरने पर हम सरकार की अनेक योजनाओं में सम्मिलित होकर एक ओर आयकर की बचत करते हैं तो दूसरी ओर हम अपने परिवार के लिए चिकित्सा सुविधा और जीवन बीमा की पोलिसी लेकर सुरक्षा प्रदान करते हैं। इससे आयकर में 5 प्रतिशत से 30 प्रतिशत तक की छूट भी मिल जाती है और परिवार को किसी अनहोनी से भी बचाते हैं।

(6) आय प्रमाणपत्र- अपनी व्यक्तिगत आवश्यकता पड़ने पर हमें जीवन में कभी ऋण आदि लेने पर बैंक आदि को आय प्रमाणपत्र एक आवश्यक अंग है जो कि आयकर भरने पर जो प्रपत्र मिलता है, वही आय प्रमाण पत्र है।

(7) बचत करने की आदत बनना- देखा गया है कि सरकारी कर्मचारी, अधिकारी आयकर बचाने के लिए आयकर विभाग की धारा 80(सी) के अन्तर्गत 1.5 लाख तक की धनराशि, पी0पी0एफ, राष्ट्रीय बचत पत्र जीवन बीमा म्यूच्चल फंड की ई0एल0एल0एस0 स्कीम आदि में जमा करके जहां एक ओर 30 प्रतिशत आयकर बचाते हैं, वहीं दूसरी ओर बचत की गयी राशि पर कम से कम 8 से 10 प्रतिशत वार्षिक ब्याज भी कमाते हैं। यानी दोनों हाथों में लड्डू व आम के आम और गुठलियों के दाम भी।

(8) बैंक में सावधि एवं बचत खाता पर ब्याज पर आयकर छूट- यदि आप साठ वर्ष से कम आयु के हैं, तो रु0 10,000/- वार्षिक ब्याज पर आयकर छूट की सुविधा परन्तु अगर आप वरिष्ठ नागरिक (साठ वर्ष से ऊपर) तो यह ब्याज की छूटसीमा 50,000/- प्रतिवर्ष है यानी अपनी बचत राशि पर दो तरह लाभ ले सकते हैं, उस पर 7 प्रतिशत वार्षिक ब्याज जो कि करमुक्त भी है। परन्तु पी0पी0एफ0 खाते पर मिलने वाला ब्याज पूर्ण रूप से आयकर से मुक्त है।

उपरोक्त विचार से आपने देखा कि वार्षिक आयकर देने से हमें अनेक व्यक्तिगत लाभ होते हैं तथा दूसरी ओर हम अपनी सरकार की आय बढ़ाते हैं, समाज के मध्यम वर्ग के व्यक्ति, जिनकी आय पांच लाख (वार्षिक) से ज्यादा है, वे ही आयकर में आते हैं। उनके द्वारा दिया गया आयकर से समाज के दुर्बल, कम आय वाले लोगों को जीवनयापन करने की अनेक सुविधाएं, जैसे कम मूल्य पर अनाज, मुफ्त गैस चूल्हा और सलैण्डर, बच्चों के लिए निशुल्क शिक्षा, ड्रेस एवं पुस्तकें बीमार होने पर सरकारी अस्पतालों में चिकित्सा सुविधा आदि देने से उनका सामाजिक स्तर का विकास होता हे। दूसरी ओर समाज में आर्थिक अपराध आतंकी घटनाएं कम होती हैं। सरकार के पास धन का अभाव न होने से अनेक योजनाएं प्रारम्भ होकर लोगों को नौकरी भी मिलेगी। समाज में लोग सुख शांति से रह पायेंगे व देश उन्नति के रास्ते पर चल पड़ेगा।

-ई0 सुरेश चन्द्र अग्रवाल
सी-47, सैक्टर-15,
नोएडा-201301
मोबा0: 9818920000

अग्रवाल नर्सिंग होम जयओम नगर अमरोहा की स्थापना की रजत जयंती 10 जनवरी की डॉ0 विवेक अग्रवाल एवं डॉ0 शेफाली अग्रवाल को हार्दिक शुभकामनाएं
डॉ0 उर्मिला अग्रवाल (माँ) एवं आर्यावर्त केसरी परिवार

## शुभ परिणयोत्सव : हार्दिक बधाई

## श्रुति एवं राहुल बंधे दाम्पत्य सूत्र बंधन में

श्रीमती अनिता एवं श्री सुमन कुमार वैदिक (ग्रेटर नोएडा) की सुपुत्री श्रुति का शुभ विवाह 29 दिसम्बर 2019 को श्रीमती कमलेश एवं ले0 मुकेश शर्मा (फरीदाबाद) के सुपुत्र राहुल के साथ हर्षोल्लासमय वातावरण में सम्पन्न हुआ। आर्यावर्त केसरी परिवार इनके मंगलमय दाम्पत्य जीवन की परम पिता परमात्मा से कामना करता है। हार्दिक बधाई

## विनय आर्य को पौत्र रत्न की बधाई

आर्य समाज अमरोहा के प्रमुख स्तम्भ व स्वनामधन्य महाशय सत्यप्रकाश आर्य जी के पुत्र विनय प्रकाश आर्य एवं श्रीमती अंजु आर्य को 12 जनवरी को पौत्र रत्न की प्राप्ति हुई है।

इस उपलक्ष्य में दादा-दादी व परिजनों सहित श्रीमती गरिमा आर्या एवं आदित्य आर्य को माता-पिता बनने पर हार्दिक बधाई।
हम नवजात शिशु के सुस्वास्थ्य दीर्घायु, श्रीसम्पदा वैभव एवं यशमय जीवन की परमपिता परमात्मा से कामना करते हैं।

आर्यावर्त केसरी परिवार

आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 के अंतरंग सदस्य राजनाथ गोयल का 60वाँ जन्म दिवस 11 जनवरी को आर्य समाज अमरोहा में समारोह पूर्वक मनाया गया। हार्दिक बधाई

आर्य समाज अमरोहा के प्रधान नत्थू सिंह का जन्म दिवस 12 जनवरी को आर्य समाज में समारोह पूर्वक मनाया गया। हार्दिक बधाई

# मानव जीवन में संस्कारों का महत्व

श्रीमती मनीषा विमल

यद्यपि संस्कार शब्द सुनकर मन में पहला भाव आता है, कर्मकाण्ड द्वारा की गई कोई पूजा या क्रिया, जबकि वास्तव में संस्कार शब्द का अर्थ है - किसी वस्तु या व्यक्ति को परिष्कार, परिमार्जन, परिशुद्धि तथा आत्मा पर अच्छे प्रभाव डालने वाले विचार, भाव तथा ज्ञान संस्कार शब्द के द्वारा ज्ञान होता है मनुष्य के व्यक्तित्व उसके व्यवहार तथा आन्तरिक स्वरूप का।

जब कोई व्यक्ति आदर सम्मान व्यक्त करता है शिष्ट व्यवहार करता है तो एक ही वाक्य सुनाई देता है बड़ा ही संस्कारवान है।

महर्षि दयानन्द ने सोलह संस्कारों को कराने का विधि विधान ह्रसंस्कार विधिह्र नाम की पुस्तक में लिखे हैं। इसी पुस्तक में संस्कारों का महत्व बताते हुए वह लिखते हैं- शरीर और आत्मा की शुद्धि के लिए परम आदरपूर्वक वेदादि शास्त्रों के सिद्धान्तों को ध्यान में रखकर आर्यो के एतिध्य (इतिहास) को भी विचार करके विद्वानों को संस्कारों का आयोजन करने के लिए उद्यम करना चाहिए, संस्कारों से संस्कृत (परिमार्जित) जो भी व्यक्ति या वस्तु होगी उसे मेध्य या पवित्र कहा जाता है। इसी प्रकार लोक (संसार) में जो भी व्यक्ति व वस्तु असंस्कृत (अशुद्ध) हो, उसे अमेध्य या अपवित्र माना जाता है। यह संस्कार शिक्षा व औषधियों के द्वारा किया जाता है जिससे नित्य ही सर्वथा सुखों की वृद्धि होती है।

वास्तव में संस्कार का एक बहु प्रचलित शब्द रस्मोरिवाज भी है, किन्तु आजकल की नई पीढ़ी जो पाश्चात्य सभ्यता में रंग रही है इनको व्यर्थ के पाखण्ड मानकर छोड़ रही है। इसी कारण हिन्दु समाज के संस्कार व संस्कार जनित चिन्ह प्रायः लुप्त होते जा रहे हैं जैसे चोटी रखना, जनेऊ धारण करना, धोती पहनना, टोपी पहनना आदि इसी तरह महिलाओं में ही मांग भरना, बिन्दी लगाना, कांच की चूड़ियां पहनना, साड़ी पहनना या पारम्परिक परिधान पहनना।

बालक जब पैदा होता है तो उसके साथ तीन प्रकार के संस्कारों के साथ जन्म लेता है।

1. पूर्व जन्म के कर्मो पर आधारित संस्कार - जैसा कि वेद शास्त्रों में बताया गया है आत्मा के साथ जुड़े सूक्ष्म शरीर पर पड़े उस जन्म के संचित कर्मो से प्राप्त संस्कार, वह अच्छे भी हो सकते हैं और बुरे भी हो सकते हैं।

2. दूसरे प्रकार के संस्कार - माता पिता के द्वारा पीढ़ीगत प्राप्त गुण व स्वभाव होते हैं। यह पांच पीढ़ी माता व सात पीढ़ी पिता की- इनसे प्राप्त होते हैं। जैसे रूप रंग आकार, शारीरिक गठन

3. तीसरे प्रकार के संस्कार- मनुष्य को बाह्य वातावरण से समय समय पर मिलते हैं जिनके लिए महर्षि दयानन्द ने सोलह संस्कारों का चयन कर संस्कारित करने का विधान किया है।

संस्कार एक स्मात कर्म है जिनका विधान देश काल एवं परिस्थिति के आधार पर किया जाता है जिससे मानव मस्तिष्क पर उस संस्कृति के बीजारोपड़ हो सके। इन संस्कारों का मुख्य आधार ग्रहस्थ आश्रम है। महर्षि दयानन्द ने चार आश्रय बताये हैं।

एक ब्रहमचर्य आश्रम जो शिक्षा का आधार है, दूसरा ग्रहस्थ आश्रम जो मनुष्य के सारे जीवन का आधार है तीसरा वानप्रस्थ आश्रम जो ग्रहस्थ धर्म के पश्चात अपने लिये समाज के लिए कुछ करने हेतु सेवा, परोपकार व स्वाध्याय साधना के लिए है तथा चौथा आश्रय है सन्यास जो केवल विचरण कर समाज को शिक्षित करने के लिए तथा ईश्वर के प्रति समर्पित होकर त्याग विनम्रता साधना के लिये है।

महर्षि दयानन्द जी द्वारा बताये गये सोलह संस्कारों में विवाह संस्कार का स्थान तेरहंवा स्थान है किन्तु यदि देखा जाये तो सभी संस्कारों का आधार विवाह ही है जिसके बाद ही आरम्भ के बारह संस्कारों का आरम्भ होता है।

1. गभार्धान संस्कार 2. पुसंवन संस्कार 3. सीमन्तोन्नयन

यह तीन संस्कार जन्म से पूर्व के हैं किन्तु यह आरम्भ तो विवाह के पश्चात जब पति पत्नी आपसी तालमेल से माता पिता बनने योग्य होते हैं।

चैथा संस्कार - जातकर्म संस्कार है जो बच्चे के जन्म के तुरन्त पश्चात किया जाता है।

पांचवा संस्कार - नामकरण संस्कार जो बच्चे के जन्म के दस दिन, इक्कीस दिन या एक सौ एक दिन बाद बच्चे का समाज में एक नाम पुकारने के लिए किया जाता है।

छठा संस्कार - निष्क्रमण संस्कार - बाहरी दुनिया से सम्पर्क कराने के लिए बालक के जन्म के पश्चात तीसरे मास की शुक्ल पक्ष की तृतीया को कराया जाता है जिसका तात्पर्य है बालक को बाहरी दुनिया, पेड़ पौधे, सूर्य चन्द्र तारों का अवलोकन कराना।

सातंवा संस्कार है अन्न प्राशन - प्रथम बार 6 मास का बालक होने पर अन्न खिलाना, जैसे खीर आदि।

आठंवा संस्कार है - चूड़ा कर्म या मुण्डन इसे चैल संस्कार भी कहा जाता है। प्रायः यह प्रथम वर्ष या तीन व पांच वर्ष में कराया जाता है। इस संस्कार का अब भी काफी चलन है।

इन आठ संस्कारों का किसी न किसी रूप में अभी भी चलन है। यद्यपि जन्म से पूर्व के तीनों संस्कार विधिवत नहीं किये जाते।

आजकल इस वैज्ञानिकता को चिकित्सक स्वीकार करने लगे हैं कि गर्भाधान संस्कार एक महत्वपूर्ण संस्कार है इसीलिय बच्चे के गर्भ में आते ही उसकी प्रक्रिया पर ध्यान देने लगे हैं। अब चिकित्सक भी मानने लगे हैं कि यह नौ माह बच्चे के भविष्य का निर्माण करने वाले हैं। इसी उद्देश्य से मध्य प्रदेश के एक चिकित्सालय में एक पायलट प्रोजेक्ट गर्भ के स्वस्थ विकास हेतु आरम्भ किया गया है जो वहां की गर्वनर आनन्दी वेन पटेल में शान्ति कुंज के माध्यम से शुरू कराया है, उसमें सभी गर्भवती महिलायें यज्ञ में सम्मिलित होती हैं जो हर माह होता है, बाकी समय उन्हें अपने अपने धर्म के अनुसार मन्त्र पाठ श्लोक या आयाते ध्यान गर्भ सम्वाद खानपान के निर्देश दिये जाते हैं। गर्भवती महिलाओं की कक्षा लगाकर प्रत्येक 15 दिन का शैडयुल दिया जाता है। चिकित्सालय में यज्ञ कुण्ड बनाये गये हैं। वैदिक गर्भ संस्कार के लिए आने वाली महिलाओं को गायत्री मंत्र का सही उच्चारण करना सिखाया जाता है और मुस्लिम महिलाओं को कुरान की आयतें पढ़ना सिखाया जाता है। गर्भ संस्कार के समय उन्हें पीपल की कोपलें, बरगद की छाल व गिलोय को पीस कर बनाई गई औषधि सूधंने को दी जाती है। प्रत्येक माह यज्ञ के पश्चात विशेष रूप से बनाई खीर प्रसाद स्वरूप दी जाती है। यह सब वहां निशुल्क होता है। नौवा संस्कार कर्ण वेध संस्कार है - यद्यपि इस संस्कार के बहुत सकारात्मक प्रभाव पड़ते हैं बड़े होने पर पुरूषों में कुछ रोग नहीं होते किन्तु आजकल यह नगण्य ही हो गया है।

दस व ग्यारहंवा है - उपनयन संस्कार एवं वेदारम्भ संस्कार

यह समाज में एक विशेष पहचान के लिए जनेऊधारण के लिए होता है। गुरूकुलों में तो अब भी प्रचलित है या किसी समाज में शादी से पूर्व किया जाता है। वेदारम्भस द्वारा शिक्षा आरम्भ की जाती है।

बारहवां संस्कार - समार्वतनव के नाम से है जिसे दीक्षांत समारोह भी कहते हैं अर्थात विद्या समाप्ति के पश्चात गुरूकुल से शिक्षा समाप्त करके होता है या विश्वविद्यालय में डिग्री प्राप्त करने के पश्चात होता है।

अब आता है विवाह संस्कार जो जीवन का सबसे महत्वपूर्ण संस्कार है जिसमें दो व्यक्ति स्त्री व पुरुष मिलकर ग्रहस्थ में प्रवेश करते हैं तथा इस संस्कार के द्वारा शिक्षित होते हैं। उनको भावी जीवन निर्वाह के लिए प्रतीज्ञा कराई जाती है। एक साथ जल व दूध की भांति मिलकर रहने का सन्देश दिया जाता है।

क्योंकि संस्कारों से तात्पर्य है मनुष्यों को पुरूषार्थ चतुष्टय अर्थात धर्म, अर्थ, काम मोक्ष को प्राप्त करना। इनका समन्वय तो वानप्रस्थ तक आते आते हो जाता है। धर्म अर्थ व काम तो गृहस्थ में ही प्राप्त कर लिये जाते हैं। मोक्ष के लिये वानप्रस्थ व सन्यास आश्रम है और यही चौदहवां पन्द्रहवां संस्कार है।

अन्तिम संस्कार अन्त्येष्टी संस्कार है जो मनुष्य के देहावसान के पश्चात समाज द्वारा किया जाता है। इस संस्कार का मुख्य उद्देश्य है काफी मात्रा में सामग्री घी व समिधाओं के द्वारा शव दाह करना जिससे प्रदूषण न फैले। इसके बाद घर पर यज्ञ करना चाहिये।

इन संस्कारों का विधि विधान हमारे प्राचीन ग्रन्थों में मिलता है, बीच के समय यह संस्कार विधि प्रायः लुप्त हो गई, किन्तु धन्यवाद है महर्षि दयानन्द जी को, जिन्होंने पुनः विधि विधान द्वारा इन संस्कारों को करने का विधान बनाया, क्योंकि संस्कार का अर्थ ही है मानव जीवन में अच्छे गुणों का स्वभाव विचारों का बीजारोपड़ कर विनम्र, सज्जन मनुष्यों का निर्माण करना, इसीलिए मानव जीवन में संस्कारों का विशेष महत्व है। इन्हीं के द्वारा अपने देश की संस्कृति भाषा रहन सहन विशिष्ट गुणों का ज्ञान मिलता है तथा एक स्वस्थ समाज बनता है।

2/25 आर्य वानप्रस्थ आश्रम मो- 9760618162 ज्वालापुर, हरिद्वार

## प्रवीन आर्य को पितृ शोक

हरिद्वार। पतंजलि योगपीठ हरिद्वार के जिला प्रभारी तथा आर्य समाज बीएचएल आर्य प्रवीण वैदिक के पिता डॉ0 तारा चन्द्र अग्रवाल का 17 दिसम्बर 2019 को उनके पैतृक निवास हापुड़ में निधन हो गया। श्री अग्रवाल जी आर्य समाज के प्रति आजीवन समर्पित रहे। वो एक निष्ठावान तथा सहृदय इंसान थे। उनके निधन पर आर्य समाज तथा अन्य सामाजिक संगठनों ने हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि यह परिवार तथा समाज के लिए अपूर्णणीय क्षति है। आर्यावर्त केसरी परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि।

## हार्दिक श्रद्धांजलि

जाने कितने ही गये इस राह से
उनका पता क्या
पर गये कुछ छोड़ इस पर अपने
पैरों की निशानी
वो निशानी मूक होकर भी बहुत
कुछ बोलती है...

*श्री राम सेवा ट्रस्ट (रजि0), श्री राम विज्ञान संकाय, श्रीराम पब्लिक इंटर कॉलेज अमरोहा के संस्थापक व आर्यावर्त केसरी के संरक्षक*

**श्रद्धेय श्रीराम जी गुप्ता**
पुण्यतिथि : 31 दिसम्बर
**कोटि-कोटि नमन**

*त्याग के मोती चुगे थे*
*विश्व के इस मानसर में*
*श्वेत सन्यासी रहे तुम*
*जिन्दगी के इस सफर में*

**श्रद्धेय नन्दराम रूस्तगी**
पुण्यतिथि : 22 दिसम्बर
**कोटि-कोटि नमन**

## विनम्र श्रद्धांजलि...

मुझे यह सूचित करते हुए अत्यंत दुःख हो रहा है कि वेद, व्याकरण, दर्शनशास्त्र और कर्मकाण्ड के अत्यन्त कुशल विद्वान परम श्रद्धेय आचार्य सत्यानन्द जी वेदवागीश का 86 वर्ष की अवस्था में निधन हो गया है। अन्तिम संस्कार जयपुर के करणी श्मशान घाट पर सम्पन्न हुआ। परम मनीषी आचार्यप्रवर को कोटि कोटि नमन

आचार्य सत्यानंद जी वेद वागीश जी को सादर श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं प्रधान मंत्री व सभी सभासद आर्य समाज पटेल नगर, बीकानेर।

## चतुर्वेद परायण एवं चिकित्सा महायज्ञ सम्पन्न

# जो मानव मन को पवित्र कर लेता है वही तपस्वी है- अरविन्द शास्त्री

(सुमन कुमार वैदिक)

मेरठ । ब्रह्मचारी कृष्णदन्त (बरनावा) की प्रेरणा से उनके शिष्यों द्वारा जो चतुर्वेद यज्ञों की श्रंखला स्थान, स्थान पर वर्षो में कई बार की जाती है उसी कड़ी में 8 से 13 अक्टूबर तक त्यागी होटल मेरठ में तृतीय चतुर्वेद परायण एवं चिकित्सा महायज्ञ का आयोजन ग्यारह बड़ी यज्ञ शालाओं पर एक साथ आयोजित किया गया। इस भव्य आयोजन के ब्रह्मा योगाचार्य अरविन्द शास्त्री (बरनावा) रहे। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि यज्ञ एक ऐसा विचित्र कर्म है जिसमें जिस भावना से आहूतियां दी जाती है वह पूर्ण होती है।

ऋषि मुनि आयुर्वेद भौतिकी विज्ञान और आध्यात्मिक विज्ञान तीनों का समन्वय करते थे। परमात्मा का ज्ञान-विज्ञान अनन्त है जिसको कोई पूर्णता में नहीं जान पाता। जीवन वह कहलाता है जिसके कारण पश्च महाभौतिक पिण्ड अपने में गति करते हैं। जब संसार का सकीर्णवाद और अन्धकार हमारे समीप नहीं रहता उस काल में जीवन की प्रतिभा हमारे समीप रहती है। यह विचार जो मानव अने मन को पवित्र बना लेता है वह तपस्वी है। मन प्रकृति का सूक्ष्म तन्तु है। वह जो आहार मानव के लिए परमात्मा ने उत्पन्न किया उसके माव से बनता है। अन्न पवित्र होने से हमारी साधना जहां बलवती बनती है वहीं हमें स्वास्थ्य रखती है। महर्षि याज्ञवल्क्य ने उस अन्न को पान किया जिस पर किसी का अधिकार नहीं था। उस अन्य को पान करके, इन्द्रियों पर संयम रखकर शतपथ ब्राह्मण को बनाया। यज्ञ के महत्व पर प्रकाश डालते हुए देवताओं की तृप्ति से अमर फल की प्राप्ति होती है। हम स्वस्थ रहते हैं हमारे रोग नष्ट होते हैं। यज्ञ चिकित्सा हमारी सभी प्रकार की चिकित्सा में सबसे शीघ्र प्रभाव दिखाती थी। आज यज्ञ ही लोगों ने छोड़ दिये तथा यज्ञ चिकित्सा का लोप हो गया। आचार्य गुरुवचन शास्त्री ने वेद मंत्रों की व्याख्या के साथ ब्रह्मचारी कृष्णदत्त के विषय में बताया कि इस जन्म में शिक्षा न प्राप्त करने पर भी पूर्वजन्मों की स्मृति के आधार पर अनेकों विषयों पर ऐसी ज्ञान की धारा प्रवाहित की जिससे हजारों लोग उनसे प्रभावित है। आज भी दैनिक यज्ञ के साथ वार्षिक परायणयज्ञ करते हैं ऐसी आत्मा को नमन। 11 वेदियों पर एक साथ चारों वेदों के यज्ञ का संगम का मनोहर दृश्य था। आचार्य अरविन्द जी का कहना था जब चारों वेद परमात्मा ने एक साथ दिये तो चारों वेदों का यज्ञ एक साथ एक स्थान पर क्यों नहीं हो सकता। तीन वेदियों पर सामवेद और यजुर्वेद तथा चार-चार वेदियों पर ऋग्वेद और अर्थवेद के पवित्र कल्याणकारी मंत्रों से आहुतियां दी गयी। इस यज्ञ में विशेष औषधियुक्त सामग्री बनायी गयी थी। जिससे कई प्रकार के रोगों से लोगों को मुक्ति मिली। यज्ञ के आयोजन में डा0 अनिल चैहान (चिकित्सक चन्द्रहास पूर्व महाप्रबन्धक दूरभाष) सतीश, रविन्द्र, सौदान शास्त्री, मुकेश शास्त्री, संजय, जगत सिंह, विजेन्द्र गुप्ता, यशोधर्मा सौलंकी, अमित, कादियान पत्नी सहित यज्ञमान रहे। वेद मंत्रों का पाठ आचार्य सुनील शास्त्री, आचार्य रोहित, आचार्य कपिल, मोहित, अजय, निखिल, गंगाशरण, मनीष ने किया। यज्ञ का आयोजन मेरठ के कई प्रसिद्ध चिकित्सकों ने डॉ0 अनिल चैहान, डॉ0 अनुराग, डॉ0 विवेक, डॉ0 रोनक ने तथा चन्द्रहास पूर्व महाप्रबन्धक के संयुक्त प्रयास से किया गया। आर्यावर्त केसरी के प्रबन्ध सम्पादक सुमनकुमार वैदिक को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि यदि औषधियों से रूग्ज नष्ट होते तो सारा संसार रोगमुक्त हो जाता। आधुनिक चिकित्सा पद्धति रोग मुक्त नहीं कर पा रही है। आयुर्वेद जो हमारी प्राचीन निरापद पद्धति थी उसे आधुनिक वैद्यों ने डाक्टर बनने के चक्कर में सूखे सड़ी वनस्पतियों से औषधियां बनी बनायी देने की प्रारम्भ की। पहले वैद्य हरी औषधियों से रोगी का उपचार करते थे। जिसमें जीवन नहीं है ऐसी वनस्पतियों से निर्मित औषधियों कैसे हमे रोग मुक्त कर सकेगी। पूर्णाहूति पर हजारों श्रद्धालुओं ने आहुतियां दी।

## दीपशिखा मंच की गोष्ठी सम्पन्न

हरिद्वार (डॉ0 सुशील कुमार त्यागी 'अमित')। दीपशिखा साहित्यक एवं सांस्कृति मंच ज्ञानोदय अकादमी, हरिद्वार द्वारा आयोजित गोष्ठी श्रीगीता विज्ञान आश्रम, विष्णु गार्डन, कनखल के सभागार में हुई। इस अवसर पर गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के वेद विभाग के प्रोफेसर डा0 मनुदेव बंधु को उनके शोध ग्रंथ उपनिषद् वाड्मय में योगविद्या ऋषिकुल आयुर्वेदिक कालेज हरिद्वार के शल्य विभाग के अध्यक्ष प्रो0 अजय कुमार गुप्ता को तथा उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय के व्याकरण विभाग के असि0 प्रोफेसर डा0 राकेश कुमार सिंह को उनके शोधात्मक निबन्धों के लिए उन्हें दीपशिखा ज्ञानोदय अकादमी सम्मान-2019 से सम्मानित किया गया। यह सम्मान संस्था के संस्थापक अध्यक्ष के0एल0 दिवान, अध्यक्ष-डा0 मीरा भारद्वाज, उपाध्यक्ष उमेश शर्मा, सचिव-डा0 सुशील कुमार त्यागी अमित, सह-सचिव- जगदीश शर्मा शेषी के कर कमलों द्वारा प्रदान किया गया। इस अवसर पर उक्त महानुभावों को माला, दुशाला एवं साहित्य भेंट किया गया।

इस अवसर पर पं0 ज्वाला प्रसाद शांडिल्य दिव्य मांगेय कमल, तुषार कांत पाण्डेय, कु0 पूनम, गौरव शर्मा, अभिनव, आचार्य राधेश्याम सेमवाल आदि कवियों ने भी काव्यपाठ किया और सम्मानित लेखकों को शुभकामनाएं दीं।


देश-विदेश में प्रसारित होने वाले

# आर्यावर्त केसरी

में विज्ञापन देकर लाभ उठाएं

आर्यावर्त केसरी वर्तमान में देशभर के कोने-कोने के साथ ही विश्व के अनेक देशों में प्रसारित हो रहा है। विज्ञापनदाताओं से अनुरोध है कि वे अपने व्यक्तिगत विज्ञापन, शिक्षण संस्थाओं एवं व्यापारिक प्रतिष्ठानों के विज्ञापन आर्यावर्त केसरी में प्रकाशित कराकर लाभ उठायें।

**विज्ञापन दर इस प्रकार हैं-**

| | |
|---|---|
| पूरा पृष्ठ रंगीन, एक अंक का शुल्क | - 12000/- रूपये |
| अन्द के पृष्ठ रंगीन एक अंक, 1/2 पृष्ठ का शुल्क | - 6500/- रूपये |
| अन्दर के पृष्ठ रंगीन, एक अंक, 1/4 पृष्ठ का शुल्क | - 3500/- रूपये |

स्थाई अथवा एक बार से अधिक प्रकाशित होने वाले विज्ञापनों पर विशेष छूट देय है।

-**प्रबन्धक** (विज्ञापन) मोबा. : 8630822099


# यतो धर्मस्ततो जयः - जहां धर्म वहां विजय

भारत सदा से ही धर्म परायण रहा है। इसी धर्म ध्वा को सर्वोच्च न्यायालय ने भी फहराया है।

सर्वोच्च न्यायालय में यह वाक्यांश लिखा हुआ है यतो धर्मस्ततो जयः। एक अन्य वाक्यांश जो लिखा हुआ है वह सत्य है- सत्य वहांम्यहम-सत्य महान है। न्याय इन दो सिद्धान्तों पर ही टीका है। धर्म व सत्य ही न्याय के आधार रहे हैं। इसी कारण शताब्दियों चले आ रहे विवाद का हल राम मंदिर निर्माण के पक्ष में हुआ है। भगवान श्रीराम श्रुतिपथ पालक धर्म धुरंधर है।

हमारे शास्त्रों में धर्म व सत्य की बहुत महिमा बतायी गयी है। धर्म के बारे में बताया गया है कि "धर्मम इष्टं नृणा" धर्म ही सर्वोत्तम धन है। इसी तरह श्रीमदभागवतम के शुरू में लिखा है कि सत्यं परम धीमही, मुंडकोप निषद में लिखा गया है- सत्यमेव जयते-जीत सत्य की ही होती है। पथां विसर्गे धरुणेण तस्थौ- जीवन का आधार शाश्वत धर्मतत्वों पर खड़ा है, जहां सब पंथों का विसर्जन होता है।

पंच परमेश्वरो (पांच न्यायधीशो) ने अपने ऐतिह. सिक फैसले में स्कंदपुराण आदि कई ग्रंथों को अपने निर्णय का आधार बनाया है और बेझिझक धर्मसंपद निर्णय दिया है।

## धर्मो रक्षति रक्षित

जो धर्म का रक्षण करता है, धर्म उसकी रक्षा करता है। धर्म जिस के अभाव में व्यक्ति का जीवन अपूर्ण है। धर्म से व्यक्ति पूर्ण विकसित होता है। धर्म : साधना है, सम्प्रदाय नहीं। धर्म : उत्थान का मार्ग है, कल्याण का कर्ता है। धर्म : स्वयं में परिपूर्ण है, सभी के लिए समान है। सभी रूप से अनुकरणीय है। धर्म : किसी को तोड़ता नहीं, आपस में जोड़ता है, परस्परोपग्रहोजीवानाम्। धर्म : वहां है जहां आचरण में अहिंसा, विचारों में उदारता, व्यवहार में नम्रता, हृदय में सरलता है। धर्म : वहां है जहां प्रेम, करूणा व सद्भाव है। धर्म : की बुनियाद नीति व न्याय पर आधारित है। धर्म : धर्म का अर्थ है जीवन की समग्रता धारण करना व धर्म की बुनियाद पर जीवन निर्माण करना। धर्म : आत्मा से अद्भुत सहज उपलब्धि व सद्प्रवृत्ति का नाम है।

निन्दतु नीतिनिपुणा : यदिया स्तुवन्तु, लक्ष्मी : समाविषतु गच्छतु वा यथेष्टम्, अद्यैव वचार मरणमस्तु युगान्तरेवा, न्याय्यत् पथः प्रविचलन्ति पद न धीराः। - तथाकथित नीति-निपुण जन निंदा करें या सराहे, यथेष्ट परिमाण में धनसम्पदा मिले या चली जाए, आज और कल, जीवन में, या मृत्यु की स्थिति में, युग-युगान्तर में, किसी भी अनुकूल या प्रतिकूल स्थिति में, धीर पुरुषों के चरण न्याय के पथ से कभी विचलित नहीं होते।

॥ धर्म व न्याय निष्ठ बनें ॥

धर्मस्य फल मिच्छान्ति, धर्म नेच्छन्ति मानवा। पापस्य फल नेच्छन्ति, पापं कुर्वन्ति यत्नतः॥ अर्थात् मनुष्य धर्म में सुफल की इच्छा तो करते हैं किन्तु धर्म पालन करने की इच्छा बिल्कुल नहीं करते, इसी प्रकार पाप के कुफल की इच्छा तो नहीं रखते, किन्तु प्रयत्न पूर्वक पाप कर्मों में लिप्त रहते हैं। तुलसी दासजी ने ठीक ही कहा है- सेवाधर्म कठिन जग जाना।


**श्री विश्वशांति टेकड़ीवाल परिवार**

86/92, सीताराम पोद्दार मार्ग, मुंबई-400002,

फोन : 22065588/22085035

डी-72, कल्पतरू टॉवर, आकुर्ली क्रोस रोड नं. 3,

कांदिवली (पूर्व), मुंबई-400101, फोन : 28872766

आर्यावर्त केसरी
व्यक्ति-विशेष
पाक्षिक हिन्दी समाचार पत्र, अमरोहा (उत्तर प्रदेश)
16-31 जनवरी 2020


## हरिद्वार स्थित पतंजलि योगपीठ ट्रस्ट

# स्वामी रामदेव के द्वारा मानव उत्थान के प्रमुख कार्य

स्वामी रामदेव ने सन् २००६ में महर्षि दयानन्द ग्राम हरिद्वार में पतंजलि योगपीठ ट्रस्ट के अतिरिक्त अत्याधुनिक औषधि निर्माण इकाई पतंजलि आयुर्वेद लिमिटेड नाम से दो सेवा प्रकल्प स्थापित किये। इन सेवा-प्रकल्पों के माध्यम से स्वामी रामदेव योग, प्राणायाम, अध्यात्म आदि के साथ-साथ वैदिक शिक्षा व आयुर्वेद का भी प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। उनके प्रवचन विभिन्न टी० वी० चैनलों जैसे आस्था टीवी, आस्था इण्टरनेशनल, जी-नेटवर्क, सहारा-वन तथा इण्डिया टी०वी० पर प्रसारित होते हैं। भारत में भ्रष्टाचार और इटली एवं स्विट्जरलैण्ड के बैंकों में जमा लगभग ४०० लाख करोड़ रुपये के "काले धन" को स्वदेश वापस लाने की माँग करते हुए बाबा ने पूरे भारत की एक लाख किलोमीटर की यात्रा भी की। भ्रष्टाचार के खिलाफ बाबा रामदेव जी अनवरत लड़ाई जारी है और राष्ट्र निर्माण में भी वो प्रमुख भूमिका निभा रहे हैं। इसके अलावा स्वामी रामदेव ने स्वच्छ भारत अभियान में भी भाग लिया। इतना ही नहीं उन्होंने इस अभियान के तहत हरिद्वार और तीर्थ नगरी ऋषिकेश को गोद लेने की घोषणा की।

## योग शिविरों का आयोजन

बाबा रामदेव समय-समय पर योग शिविरों का आयोजन करते रहते हैं। अपने योग शिविरों के माध्यम से बाबा रामदेव भारतीय संस्कृति और योग के महत्व को विदेशों में भी जन-जन तक पहुंचाने का काम कर रहे हैं। अपने इसी क्रम को आगे बढ़ते हुए उन्होंने ऑस्ट्रेलिया का दौरा कर भारतीय संस्कृति का और योग का प्रचार-प्रसार किया, जिससे वहाँ पर भी लोग उनसे काफी प्रभावित हुए। बाबा रामदेव का एक संकल्प है कि पूरा देश स्वस्थ हो और पूरे देश को स्वस्थ बनाने की कड़ी में बाबा रामदेव ने अब सेना के जवानो को भी योग सिखना शुरू किया है। जिसकी शुरूआत उन्होंने जैसलमेर में जवानों को योग सिखाने से की। इसके अलावा बाबा रामदेव ने दिल्ली में भी सैनिक और उनके परिवारजनों के लिए योग शिविर का आयोजन किया।

## भ्रष्टाचार के खिलाफ अनशन

बाबा रामदेव ने जब २७ फरवरी २०११ को रामलीला मैदान में जनसभा की थी उस जनसभा में स्वामी अग्निवेश के साथ-साथ अन्ना हजारे भी पहुँचे थे। इसके बाद दिल्ली के जन्तर मन्तर पर ५ अप्रैल २०११ से अन्ना हजारे सत्याग्रह के साथ आमरण अनशन की घोषणा की जिसमें एक दिन के लिये बाबा रामदेव भी शामिल हुए। बाबा रामदेव ने ४ जून २०११ से दिल्ली के रामलीला मैदान में अनशन के साथ सत्याग्रह की घोषणा कर दी। ४ जून २०११ को प्रातः सात बजे सत्याग्रह प्रारम्भ हुआ। रात को बाबा रामदेव पांडल में बने विशालकाय मंच पर अपने सहयोगियों के साथ सो रहे थे चीख-पुकार सुनकर वे मंच से नीचे कूद पड़े और भीड़ में घुस गये। ५ जून २०११ को सुबह १० बजे तक बाबा को लेकर अफवाहों का बाजार गर्म रहा। यह सिलसिला दोपहर तब जाकर रुका जब बाबा ने हरिद्वार पहुँचने के बाद पतंजलि योगपीठ में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस करके अपने बच कर निकलने की पूरी कहानी सुनाई।

## स्वामी को प्राप्त सम्मान

- बेरहामपुर विश्वविद्यालय द्वारा स्वामीजी को डॉक्ट्रेट की मानद उपाधि प्रदान की गई।
- इंडिया टुडे पत्रिका द्वारा लगातार दो वर्षों से तथा देश की अन्य शीर्ष पत्रिकाओं द्वारा रामदेव को देश के सबसे ऊँचे, असरदार व शक्तिशाली ५० प्रभावशाली लोगों की सूची में सम्मिलित किया गया।
- एसोचैम द्वारा स्वामीजी को ग्लोबल नॉलेज मिलेनियम ऑनर सहित देश-विदेश की अनेक संस्थाओं व सरकारों ने भी प्रतिष्ठित सम्मान प्रदान किये हैं।
- राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, तिरुपति, आन्ध्रप्रदेश द्वारा स्वामीजी को महामहोपाध्याय की मानद उपाधि से अलंकृत किया गया।
- ग्राफिक एरा विश्वविद्यालय द्वारा योग गुरु बाबा रामदेव जी को ऑनरेरी डॉक्ट्रेट प्रदान की गयी।
- एमिटी यूनीवर्सिटी, नोएडा ने मार्च,२०१० में डी०एससी०(ऑनर्स) प्रदान की।
- डी०वाई०पाटिल यूनीवर्सिटी द्वारा अप्रैल २०१० में इन्हे डी०एससी०(ऑनर्स) इन योगा की उपाधि दी गयी।
- u बाबा रामदेव को जनवरी २०११ में महाराष्ट्र के राज्यपाल के. शंकरनारायण द्वारा चन्द्रशेखरानन्द सरस्वती अवार्ड प्रदान किया गया।

### कोटिश: नमन

प्रभु आपकी कृपा से सब काम हो रहा है।
करता मेरा विधाता मेरा नाम हो रहा है।।

## शोक प्रस्ताव

आर्य जगत के कुलभूषण, योग के महान पण्डित विद्वद्रेण्य, तिद्वद्वंशाततंस, आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के सुयोग्य मंत्री आचार्य प्रवर स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती के हृदय गति रुक जाने से आकस्मिक निधन होने से आर्य समाज की अपूरणीय क्षति हुयी। जिला आर्य सभा (आर्य प्रतिनिधि सभा) ऊधम सिंहनगर के कर्मठ सुयोग्य प्रधान डॉ. विश्वमित्र आचार्य की अध्यक्षता में एक आपातकालिक बैठक शोकसभा में स्वर्गीय स्वामी जी के श्रद्धासुमन समर्पित किए गए, जिसमें आचार्य सुरेन्द्र पाल शास्त्री, इंजीनियर डी.के. आर्य, नत्थू लाल आर्य, रोशन लाला आर्य सरस, सतीश वर्मा, जनक प्रसाद, जयप्रकाश गुप्ता, रोहन सिंह, शीशपाल राजा, नरपति सिंह आर्य, डॉ. (श्रीमती) प्रतिभा शास्त्री, अमित प्रणीत, धर्मवीर, शांतिकृष्ण, अशोक आदि विनीत पाठक, मंत्री- जिला आय सभा व कोषाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड ने श्रद्धा सुमन समर्पित करते हुए कहा कि स्वामी धर्मेश्वरानन्द जैसा अवर्णनीय व्यक्ति न भूतो, न भविष्यति उन्हें शतशः नमन कर श्रद्धा सुमन समर्पित किए गये।

## जनवरी में मकर संक्रान्ति न कभी हुई न होगी

आचार्य दार्शनेय
(सुमन कुमार वैदिक)

ग्रेटर नोएडा। कुछ लोग मकर संक्रान्ति के प्रति स्वयं भ्रमित हैं कि उत्तरायण २२ दिसम्बर को नहीं १४ जनवरी को होता है। जब कि आचार्य दार्शनेय प्रमाण सहित घोषणा करता है कि जनवरी में मकर संक्रान्ति न कभी हुई न हो सकती है। २२ दिसम्बर के पश्चात् आज से दिनमान बड़ा होना प्रारम्भ होना बताता है कि उत्तरायण हो गया। इस अवसर पर आयोजित २४ कुण्डीय यज्ञ की ब्रह्मा डॉ. सुकामा आचार्या विश्वेश्वरा गुरुकुल रूड़की रोहतक ने कहा कि वैदिक आर्य तिथिपत्रक पूर्णत वेद आधारित है जिसके अनुसार पर्व मनाना ठीक है। उन्होंने कहा कि हमारे गुरुकुल में आज संकल्प पाठ उसी के आधार पर होता है।

सुमन कुमार वैदिक ने कहा कि हमारा शरीर प्रकृति से बना है जिस पर ऋतुओं पर प्रभाव होता है। किन्तु आत्मा पर नहीं। आत्मा का स्वभाविक गुण है ज्ञान। अतः मानव के जीवन में अज्ञानता हट कर ज्ञान आना उसके जीवन का उत्तरायण है। भीष्म पितामाह एक वर्ष ४ दिन वाणों की शैय्या पर रहे। जब उनके जीवन का अज्ञान समाप्त हो गया तब उन्होंने प्राण त्यागे। माता मदालसा ने अपने जीवन में ज्ञान को लेकर उत्तरायण बनाकगर शरीर त्यागा। माता गार्गी आदि विदुषियों ने भी इसी प्रकार शरीर छोड़ा। हमें अपने जीवन में ज्ञान रूपी उत्तरायण लाना चाहिए। इस अवसर पर सुन्दर प्रसाद भोजन की व्यवस्था थी।

## पाणिता ग्रह संस्कार में सप्तपदी

(१) सत्य निष्ठा से सुख दुख में परस्पर एक साथ समान रूप से भागीदार रहेंगे।
(२) सत्य निष्ठा से परस्पर स्नेह एवं प्यार की भावना रखेंगे।
(३) सत्य निष्ठा से सामंजस्य और शालीनता के साथ परिवार के समस्त सदस्यों का सम्मान करेंगे।
(४) सत्य निष्ठा से एक दूसरे की आपदा में तत्पर रहेंगे।
(५) सत्य निष्ठा से सम्पूर्ण जीवन पितृगारों का आशीर्वाद लेकर निर्बाद करेंगे।
(६) सत्य निष्ठा से हम जन्म-जन्मात साथ निभाने का वायदा करते हैं।
(७) सत्य निष्ठा से समस्त पारिवा. रिक, धार्मिक, सामाजिक पर्वो से भागीदारी करेंगे।

कृष्ण मोहन गोयल,
113, बाजार कोट, अमरोहा-244221
मोबा. : 9927064104

ऋग्वेद | यजुर्वेद

॥ ओ३म् ॥

# 'सत्यार्थ प्रकाश'

## के प्रकाशन हेतु आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा की अनूठी एवं क्रांतिकारी योजना

● पहली बार सत्यार्थ प्रकाश की लगातार 1,00,000 प्रतियाँ छापने का दृढ़ संकल्प

विशेष : प्रकाशन निधि में न्यूनतम एक हजार रुपये भेंट करने वाले महानुभावों के रंगीन चित्र 'सत्यार्थ प्रकाश' व आर्यावर्त केसरी में प्रकाशित किये जाएंगे। घोषित धनराशि अग्रिम भेजना ही आवश्यक नहीं है। यदि चाहें तो, ग्रन्थ के प्रकाशन के बाद भी यह धनराशि भेजी जा सकती है। धन्यवाद,

### आपको इस योजना से कैसे जुड़ना है?

- सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाशन के इस महायज्ञ में आप भी अपनी आस्थाओं की पावन आहुतियाँ भेंट कर सकते हैं।
- न्यूनतम रु0 3100/- की राशि भेंट करने वाले आर्यसमाजों के प्रधान, मंत्री व कोषाध्यक्ष के रंगीन चित्र सत्यार्थ प्रकाश के अंत में 1000 प्रतियों में प्रकाशित होंगे तथा उन आर्यसमाजों को सत्यार्थ प्रकाश की 31 प्रतियां इस सात्विक राशि के उपलक्ष्य में भेंट की जाएंगी।
- सभी महानुभाओं को उनके द्वारा भेंट की गयी धनराशि के बराबर मूल्य के सत्यार्थ प्रकाश निशुल्क भेंट किए जाएंगे, अर्थात् यदि आपने रुपये 1,00,000/- (एक लाख रु0) भेंट किये हैं, तो आपको सत्यार्थ प्रकाश की 1000 प्रतियां, अथवा रु. 51,000/- (इक्यावन हजार रुपये) भेंट किये हैं, तो 510 प्रतियाँ नि:शुल्क भेंट की जाएंगी अथवा रु. 5100/-, 3100/-, 2100/-, 1100/- की राशि भेंट करने पर सत्यार्थ प्रकाश की क्रमश: 51, 31, 21, 11 प्रतियां भेंट की जाएंगी। इस प्रकार आप जितनी धनराशि प्रदान करेंगे, उतने ही मूल्य के सत्यार्थ प्रकाश आपको भेंट किए जाएंगे।

### ॥ सत्यार्थ प्रकाश की इतनी प्रतियों का आप क्या करेंगे?॥

सत्यार्थ प्रकाश में 'प्रेमोपहार' नाम से जो रंगीन मुद्रित पृष्ठ है, उस पर अपना नाम, उपलक्ष्य आदि अंकित कर किसी भी शुभ अवसर यथा- जन्मोत्सव, जयन्ती, वर्षगांठ, विवाह, गृह प्रवेश, व्यवसायारम्भ, चयन, नियुक्ति आदि अथवा किन्हीं स्मृति दिवसों पुण्यतिथियों, सम्मेलनों, उत्सवों आदि में सम्मान या पुरस्कार स्वरूप अपने प्रियजनों, अतिथियों, प्रतिभागियों को यह पावन ग्रन्थ सादर-सप्रेम भेंट कर सकते हैं। तो आइये, आज ही सत्यार्थ प्रकाश की इस वृहद् योजना से जुड़कर इसके प्रचार-प्रसार में अपना बहुमूल्य योगदान दें और पुण्य के भागी बनें। धन्यवाद,

: सम्पर्क सूत्र :

**डॉ. अशोक कुमार आर्य, आर्यावर्त प्रकाशन,**

**सौम्या सदन, गोकुल विहार, अमरोहा-244221 (उ.प्र.)**

Ph. : 05922-262033, 09412139333, E-mail : aryawartkesari@gmail.com

सामवेद | अथर्ववेद

## सत्यार्थ प्रकाश निधि के सहयोगी महानुभाव

स्वामी आर्यांश: नन्द सरस्वती
पिंडवारा
आपने आर्यावर्त प्रकाशन से 200 सत्यार्थ प्रकाश का वितरण करने का संकल्प लिया है

श्री वीरेन्द्र कुमार गोयल
ज्वालापुर, हरिद्वार, रू0 6000/-

श्री सोदान सिंह शास्त्री
मेरठ, रू0 1250/-

डॉ0 निधि व डॉ0 अनिल रायपुरिया
अमरोहा, 50 सत्यार्थ प्रकाश वितरण का संकल्प लिया

हमारा पता
**सत्यार्थ प्रकाश**
प्रकाशन विधि
आर्यावर्त केसरी
आर्यावर्त कालोनी
अमरोहा
मो0 : 9412139333

## आर्यावर्त केसरी के नये आजीवन सदस्य

श्री विनोद अग्रवाल
ज्वालापुर, हरिद्वार

श्री मनीषा विमल
ज्वालापुर, हरिद्वार

आजीवन सदस्यों के चित्र आर्यावर्त केसरी में प्रकाशित किये जाते हैं।

डॉ. अशोक कुमार आर्य-प्रकाशक, मुद्रक, व स्वामी द्वारा स्टार प्रिंटिंग प्रेस के लिए आर्यावर्त प्रिन्टर्स, अमरोहा से मुद्रित व कार्यालय-
**आर्यावर्त केसरी**
मुरादाबादी गेट, अमरोहा
उ.प्र. (भारत)-244221
से प्रकाशित एवं प्रसारित
फोन : 05922-262033, 9412139333 फैक्स- 262665
डॉ. अशोक कुमार आर्य
प्रधान सम्पादक
E-mail : aryawartkesari@gmail.com

संरक्षक
स्वामी आर्येश आनन्द सरस्वती
प्रबन्धक सम्पादक
सुमन कुमार 'वैदिक'
(मोबाण : 9456274350)
साहित्य सम्पादक
डॉ. बीना 'आर्या'
सह सम्पादक :
पं. चन्द्रपाल 'यात्री' डॉ. यतीन्द्र विद्यालंकार, डॉ. ब्रजेश चौहान
टंकण - विकास अग्रवाल/इशरत अली
प्रधान सम्पादक
डॉ. अशोक कुमार आर्य